



ऑस्ट्रेलिया में एक अनोखा एल्बीनो एकिडना देखा गया है। सेही जैसा दिखने वाला यह स्तनपायी जीव सिडनी से 120 मील दूर नॉर्थ बैस्ट में बैथर्स्ट शहर में नज़र आया है। बैथर्स्ट रीजनल काउन्सिल के एक सदस्य ने इस दुर्लभ जीव को मई में देखा था, उसने ही इसे रैफ़ी नाम दिया। बैथर्स्ट रीजनल काउन्सिल के एक प्रतिनिधि ने बताया कि, “शॉर्ट बीव्ड एकिडना काफी शर्मीले होते हैं और एकान्त में रहते हैं। लेकिन एल्बीनो शॉर्ट बीव्ड एकिडना से सामना होना बेहद दुर्लभ घटना है।” रैफ़ी एल्बीनिज़्म से पीड़ित है। यह एक आनुवंशिक विकार है, जिसमें त्वचा, बाल व आंखों में मैलनिन पिगमेंट कम बनता है। स्थानीय वाइल्डलाइफ संरक्षण संगठन “वायर्स” के एक प्रवक्ता, जॉन ग्रांट ने बताया कि, वह गत दस साल से पुनर्वासि केन्द्र में काम कर रहा है और उसने अब तक मात्र तीन या चार एल्बीनो एकिडना देखे हैं। चूँकि रैफ़ी जंगल से आया है, इसलिए इसे लोगों से दूर रखा जा रहा है। क्योंकि इंसानों की सक्रियता से एकिडना तनाव ग्रस्त हो सकते हैं और स्ट्रेस के कारण, सुघकर एक स्थान से दूसरे स्थान जाने की इनकी क्षमता बाधित हो सकती है। इस क्षमता का इस्तेमाल ये जीव महत्वपूर्ण लोकेशन ढूँढने के लिए करते हैं, जैसे प्रजनन के लिए बिल आदि। एकिडना की नज़र भी कमजोर होती है। परभक्षियों से बचने के लिए ये पूरी तरह से, कान से सुने संकेतों और गंध पर निर्भर करते हैं। एकिडना में सुरक्षा का एक अनोखा तंत्र है। परभक्षी, जैसे लोमड़ी, कुत्ता, बिल्ली या डिगो, के आने पर ये, सेही की तरह गोलमटोल होकर कांटेदार गेंद का रूप ले लेते हैं, ऐसी अवस्था में इन पर हमला करना बेहद दर्दनाक हो सकता है। खतरे की अन्य स्थिति में ये अपने तीखे पंजों से जमीन खोदकर अंदर घुस जाते हैं और अपनी खाल बाहर छोड़ देते हैं और प्राकृतिक शिकारियों से बच जाते हैं। लेकिन अब इन्हें वाहनों से टक्कर, आवास विनाश व अंधाधुंध शिकार से खतरा है। अपने प्राकृतिक आवास के लिए ये जीव बेहद महत्वपूर्ण हैं। जब ये कौड़े खाने के लिए जमीन खोदते हैं तो मिट्टी के ऑर्गेनिक पदार्थों को ऊपर -नीचे कर देते हैं, जिससे जमीन के अंदर पानी जाने में मदद मिलती है।

पटना सम्मेलन में एक प्रमुख मुद्दा, विपक्ष के नेताओं पर ई.डी., सी.बी.आई., इन्कम टैक्स की “रेड” भी होगा

जैसा कि, 14 विपक्षी पार्टियों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है, 95 प्रतिशत रेड विपक्ष के नेताओं के घर व ठिकानों पर ही होती है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 22 जून। विपक्षी दलों की 23 जून को पटना में होने वाली मीटिंग का एजेंडा काफी लम्बा है। कई मुद्दे हैं, जिनमें एक मुख्य मुद्दा है विपक्षी नेताओं पर केन्द्रीय एजेंसियों ई.डी.,

- कांग्रेस, शिव सेना (उद्धव ठाकरे ग्रुप) शरद पवार की एन.सी.पी., आम आदमी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस, डी.एम.के., आर.जे.डी., सपा के प्रमुख नेता को सैन्ट्रल इन्टेलीजेंस एजेंसियों द्वारा अपने लपेटे में लिया जा चुका है। पर, यह मेहरबानी विपक्ष के नेताओं के प्रति ही क्यों?

क्या आपको कम सुनाई देता है।

कान की मशीन स्पीच थेरेपी

फ्री सुनाई की जाँच

TRIAL OF HEARING AID

CALL FOR APPOINTMENT

+91 94602 07080

PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS

Tonk Road, JAIPUR | Valsahi Nagar, JAIPUR

www.perfecthearingolutions.com

सी.बी.आई. एवं आयकर विभाग आदि का कसता शिकंजा। विपक्षी दलों के कई प्रमुख नेता हैं जिन पर केन्द्रीय एजेंसियां कार्यवाही कर चुकी हैं। बिहारी के मुख्यमंत्री 23 जून को पटना में लगभग 20 विपक्षी पार्टियों के नेताओं का स्वागत करेंगे। यह मीटिंग लोकसभा चुनाव को भाजपा और विपक्ष के बीच आमने-सामने का मुकाबला बना देगी। 14 विपक्षी दलों ने इस वर्ष मार्च में सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी कि ई.डी., सी.बी.आई. और आई.टी.

मीडिया और एयरसेल मैक्सि केस में ई.डी. व सी.बी.आई. जांच कर रही है और वे जेल भी जा चुके हैं। उनके पुत्र कार्ती पर चीनी कामगारों को अवैध रूप से वीजा दिलवाने के और 50 लाख रूपए रिश्वत लेने का आरोप है। शिव सेना के उद्धव ठाकरे गुट के संजय राउत व उनकी पत्नी मनी लॉण्डरिंग केस और मुम्बई के गोरगांव की पात्रा चाल घोटाले में आरोपी हैं। राउत को ड.डी. ने गिरफ्तार किया था वे जमानत पर हैं। ठाकरे परिवार के करीबी व्यक्ति परा भी ई.डी. ने मनी लॉण्डरिंग केस में रेड की है। शिव सेना सरकार में मंत्री रहे अनिल परब पर भी ई.डी. मनी लॉण्डरिंग केस में रेड की है। एन.सी.पी. नेता शरद पवार भी मनी लॉण्डरिंग केस में ई.डी. के रेडार पर हैं, पर अभी तक उन्हें ई.डी. के समक्ष उपस्थित होने के लिए नहीं कहा गया है। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

31 जुलाई तक भरा जा सकेगा व्यक्तिगत आयकर रिटर्न

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 22 जून। आयकर विभाग ने 2022-2023 के लिए विभिन्न श्रेणियों में करदाताओं द्वारा इन्कम टैक्स रिटर्न (आई.टी.आर.) फाइल करने की अंतिम तिथि की घोषणा कर दी है। विभाग ने आई.टी.आर. से

- **इनकम टैक्स विभाग ने कहा, जिनके एकाउन्ट्स की ऑडिट की जरूरत नहीं वे 31 जुलाई तक और जिनके एकाउन्ट्स की ऑडिट की जरूरत है वे 31 अक्टूबर तक आयकर रिटर्न भर सकेंगे।**

संबंधित कुछ फार्म भी जारी किए हैं। तीन लाख के ऊपर वार्षिक आय वालों को इन्कम टैक्स रिटर्न फाइल करना चाहिए। कॉर्पोरेट कंपनियों भी समय से पहले फॉर्म-16 जारी कर रही हैं, ताकि उनके कर्मचारी समय पर आई. (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आर.एस.एस./भाजपा का मुस्लिम वोटर को लुभाने का सुनियोजित प्लान

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने हाल ही में एक किताब के विमोचन समारोह में देश के नागरिकों में “भारतीयता” की बात कही

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 22 जून। 2024 के संसदीय चुनावों से पहले, मुस्लिमों तक पहुँचने की अपनी स्पष्ट योजना के अन्तर्गत, आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत ने भारतीय समाज-व्यवस्था में एकता की आवश्यकता बताई है। उन्होंने अंदरूनी दुश्मनी पैदा करके संकट पैदा करने का दोष “राक्षसी तथा बाहरी ताकतों” के सिर पर मढ़ दिया। एक अनुमान के अनुसार, 10 राज्यों तथा एक केन्द्र शासित प्रदेश के कुल 6 लोकसभा क्षेत्रों में अल्पसंख्य मुस्लिमों की जनसंख्या लगभग 30 प्रतिशत है। जहाँ 2019 के लोकसभा चुनावों में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण पर आधारित मतदान की स्थिति ने बहुसंख्यक हिन्दू वोटों को भाजपा के पक्ष में एकजुट कर देने में मदद की थी, वहीं अब भगवा खेमा साफ़तौर पर, अपने चुनावी आधार को बढ़ाने के लिये

- **भाजपा ने मुसलमानों में “मोदी मित्र” सर्टिफिकेट बांटे तथा मोदी मित्रों का एक राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में आयोजित करने के कार्यक्रम की घोषणा की। सम्मेलन को प्र.मंत्री मोदी भी संबोधित करेंगे।**
- **भाजपा ने पसमन्दा मुसलमानों को प्रोत्साहित करने के लिये यू.पी. के नगर पंचायत अध्यक्षों के चुनाव में 32 मिनट पसमन्दा मुसलमानों को दिये, जिसमें पांच उम्मीदवार जीते भी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि, यू.पी. के स्थानीय निकाय चुनाव में जिन मुसलमानों को भाजपा ने टिकट दिये, उनमें से नब्बे प्रतिशत पसमन्दा थे।**

अपनी पूर्ववर्ती रणनीति में एकाएक बदलाव ला रहा है। भगवा खेमा खासतौर से दक्षिण भारत तथा पूर्वोत्तर के राज्यों में ऐसा करने जा रहा है। धार्मिक स्थलों के स्वागतित्व से सम्बंधित विवादों तथा नफरतजनित अपराधों की पृष्ठभूमि के विरुद्ध भागवत, इसके साथ ही, एक समावेशी एजेंडा की

दिशा में काम कर रहे हैं तथा सभी समुदायों के लोगों की “भारतीयता” पर जोर दे रहे हैं तथा इसके लिये मददसों में जाने तथा मुस्लिम बुद्धिजीवियों के साथ मीटिंग करने पर जोर दिया जा रहा है। भागवत ने मंगलवार को एक पुस्तक के विमोचन समारोह में कहा, “कुछ देश (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कोविड का एक घोटाला सामने आया महाराष्ट्र में

मुंबई 22 जून। एनफोर्समेंट डायरेक्टोरेट (ई.डी.) ने गुरुवार को कोविड जम्बो केंद्र घोटाला मामले में बयान दर्ज कराने के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के वरिष्ठ अधिकार संजीव जायसवाल को बलाई एस्टेट कार्यालय में तलब किया। कोविड महामारी के दौरान

- **ई.डी. ने कोविडग्रस्त शवों रखने के लिए इस्तेमाल हुये बैग्स की खरीद-फरोख्त में हुये घोटाले के लिए वरिष्ठ आई.ए.एस अधिकारी संजीव जायसवाल को तलब किया।**

जायसवाल वृहदमुंबई नगर निगम के अतिरिक्त आयुक्त थे। इन्हीं के कार्यकाल के दौरान महा विकास अघाड़ी के शासनकाल में शिव सेना के नेताओं के करीबियों को उच्च दर पर ठेके दिए गए थे। जायसवाल मौजूदा समय में महाराष्ट्र (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘क्या ज्यादा महत्वपूर्ण, दिल्ली के प्रशासनिक तंत्र पर नियंत्रण या भाजपा को हराना?’

केजरीवाल ने विपक्ष के पटना समागम को बायकॉट करने की धमकी दी, अगर सम्मेलन से पहले कांग्रेस ने केन्द्रीय सरकार के अध्यादेश का संसद में विरोध करने का वचन नहीं दिया

- **केजरीवाल की धमकी से विपक्ष के सम्मेलन के प्रति जोश में कुछ कमी आयी।**
- **कांग्रेस संभवतया, वैसे ही अपने “आइडियोलॉजिकल” कारणों से (सैद्धांतिक सोच के कारण) विरोध करती संसद में। पर, कांग्रेस यह विरोध अपने सोच व समय के अनुसार करना चाहेगी, न कि, केजरीवाल के दबाव के कारण। और वैसे भी अभी संसद के मानसून सत्र की तो, तारीखें ही निश्चित नहीं हुई हैं।**
- **यू. पी. से सम्मेलन में भाग लेने वाली अब एक ही पार्टी बची है, क्योंकि मायावती को आमंत्रित नहीं किया गया और आर.एल.डी. के नेता जयंत पटना नहीं पहुंच रहे, क्योंकि, उनके घर के पारिवारिक आयोजन में उनकी उपस्थिति पूर्व निश्चित थी।**

को पटरी से उतारने का खतरा पैदा कर सकती है।

बिहार के मुख्यमंत्री तथा जनता दल (यूनाइटेड) प्रमुख नीतीश कुमार ने विपक्षी दलों की यह मीटिंग 2024 के लोकसभा चुनावों में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी का मुकाबला करने के लिये संयुक्त रणनीति की रूपरेखा बनाने के उद्देश्य से बुलाई है। आम आदमी पार्टी प्रमुख अरविन्द केजरीवाल भी इस मीटिंग में उपस्थित होने वाले हैं।

केजरीवाल के एक नजदीकी सूत्र ने गुरुवार को कहा, “आर कांग्रेस अध्यादेश के खिलाफ (आप के) समर्थन का वादा नहीं करती है तो उनकी पार्टी मीटिंग से वाक आउट कर जायेगी।”

अरविन्द केजरीवाल ने मंगलवार को यह आशा व्यक्त की थी कि कांग्रेस पटना में होने वाली गैर भाजपा दलों की मीटिंग में केन्द्र के

उस अध्यादेश को लेकर अपना रूख स्पष्ट कर देगी, जो राष्ट्रीय राजधानी की प्रशासनिक सेवाओं को केन्द्र के नियंत्रण में रखने के लिये लाया गया है।

एक नेता ने कहा कि विपक्ष की एकता को लेकर केजरीवाल का सोच “माइ वे और हाइवे” जैसा है क्योंकि वे सोचते हैं कि अध्यादेश का मुद्दा भाजपा को हराने के लिये विपक्ष की एकता से बड़ा है।

एक नेता ने कहा कि एक तरफ तो केजरीवाल राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा और उत्तराखंड में कांग्रेस को कमजोर करना चाहते हैं तथा दूसरी तरफ वे यह अपेक्षा करते हैं कि देश की सबसे पुरानी पार्टी उनकी मांग के आगे घुटने टेक दे। उक्त नेता ने आगे (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

के.सी. वेणुगोपाल जयपुर में

जयपुर, 22 जून (का.प्र.)। कांग्रेस के संगठन महासचिव और राजस्थान से राज्यसभा के सदस्य के.सी. वेणुगोपाल गुरुवार देर शाम जयपुर पहुंचे। जयपुर एयरपोर्ट पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटारसरा और राजस्थान कांग्रेस के प्रभाी सुखजिंदर

- **कांग्रेस के संगठन महासचिव व राजस्थान से राज्यसभा सदस्य वेणु गोपाल राज्य के पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री भजनलाल जाटव की पुत्री की शादी में शामिल होने जयपुर आए हैं।**

सिंह रंधावा सहित अन्य नेताओं ने उनकी अगवानी की।

के.सी. वेणुगोपाल राज्य के पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट (पी.डब्ल्यू. डी.) के मंत्री भजन लाल जाटव की पुत्री की शादी में शामिल होने और वर वधु को (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

हमने संविधान के अनुच्छेद 44 को 73 वर्षों के उपरान्त भी नहीं समझा

संविधान सभा में निदेशक तत्वों पर बोलते हुये डा. अम्बेडकर ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा था कि निदेशक तत्वों का आशय यह है कि भविष्य में विधायिका तथा कार्यपालिका दोनों ही इन तत्वों के प्रति केवल पूजनीय घोषणायें बनकर ही न रह जावें, बल्कि इन्हें कार्यपालिका तथा विधायिका के सभी कार्यों का आधार बना दिया जो इसके बाद देश में शासन के मामले में किये जावें।

निदेशक तत्व संविधान के प्रभावी भाग हैं न्यायमूर्ति के.एस. हेगडे ने कहा है कि संविधान चाहता है कि उद्देशिका में निर्धारित लोकतंत्रात्मक कल्याणकारी राज्य के आदर्शों को प्राप्त किया जावे। उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि संविधान का लक्ष्य एक ऐसे कल्याणकारी समाज का निर्माण करना है जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय हमारी राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करे।

संविधान उद्देशिका में देश के लोगों ने वचन दिया है कि राज्य सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय देगा। संविधान में राजनैतिक न्याय का उल्लेख कर उन्हें मूल अधिकार दिये जो संविधान के भाग 3 में हैं और सामाजिक आर्थिक न्याय देने के कर्तव्य का उल्लेख भाग 4 में। यहा प्रश्न यह है कि क्या अनुच्छेद 37 के आधार पर राज्य न्याय देने से मना कर सकता है? उत्तर होगा नहीं अर्थात् राज्य कर्तव्य व जनता के अधिकारों में बाधायें खड़ी नहीं कर सकता।

हम यदि इन अधिकारों व कर्तव्यों की समालोचना करें तो 72 वर्ष की आजादी के बाद भी अनुच्छेद 44 को लागू नहीं करना, राज्य की उदासीनता ही कही जायेगी।

सन 1966 को राजनैतिक संंधि थी यही निर्देशन देती है कि तीनों प्रकार के न्याय जनता को मिलने चाहिये। यह भी स्पष्ट हो चुका है मूल अधिकार व नीति निदेशक तत्वों में नागरिकों के अधिकार व राज्य के कर्तव्य ही है ये सब मानन अधिकार हैं। अतः प्रवर्तनशील हैं और एक देश एक कानून के सिद्धान्त को मानते हुये समान नागरिक संहिता लागू करना राज्य का दायित्व है।

संविधान को प्रारूपण समिति ने बनाया है जिसके अध्यक्ष डा. अम्बेडकर थे। इसे 26.1.1950 को लागू किया। समान नागरिक संहिता का उल्लेख अनुच्छेद 44 में आता है। कई दिनों तक इस अनुच्छेद पर बहस होने के बाद अनुच्छेद 44 को अन्य अनुच्छेदों के साथ भारत का संविधान बना। अनुच्छेद 44 में कहा गया, नागरिकों के लिए एक समान सिविल संहिता होगी। इसके अस्तित्व के बावत अब प्रश्न करना, अर्थहीन है। अतः जनता की राय जानना उचित नहीं है। हम संविधान को पुनः नहीं लिख सकते।

अनुच्छेद 44 संविधान का अभिन्न अंग है। संविधान का संशोधन अनुच्छेद 368 के अनुसार होगा किन्तु संविधान के बेसिक प्रावधान (Features) को संशोधित नहीं किया जा सकता। अनुच्छेद 44 का संशोधन नहीं हो सकता। इसे संविधान सभा में बहस के उपरान्त पारित किया गया था और 26.1.1950 से इसी रूप में संविधान का भाग है। सुप्रीम कोर्ट के समक्ष कई रिट याचिकायें पेश हो चुकी हैं जिनमें एक ही प्रश्न मुस्लिम भाईयों की ओर से उठाया गया था कि अनुच्छेद 44 अनुच्छेद 37 के कारण प्रवर्तनीय नहीं है। मुस्लिम पक्ष द्वारा यह आवाज उठाई गई कि समान नागरिक संहिता उनके धर्म, कुरान व शरियत के विरुद्ध है अतः उन्हें मान्य नहीं है। मुस्लिम भाईयों का यह भी कहना है कि अनुच्छेद 44, अनुच्छेद 25 तथा उनके रिवाजों में हस्तक्षेप है। आजादी से पूर्व अंग्रेजों के काल में समान नागरिक संहिता जैसा कानून नहीं था। अखण्ड भारत के समय जब सिन्धु भारत का अंग था, उस समय वहां मुसलमानों पर हिन्दू संवसेशन एक्ट लागू था।

26.1.1950 के बाद मुस्लिम भाईयों ने अनुच्छेद 44 को संशोधित करने अथवा समाप्त करने के हेतु कोई कार्यवाही सुप्रीम कोर्ट में नहीं की। समान नागरिक संहिता के विषयों में तलाक, विवाह, निर्वाह भत्ता, गोद व उत्तराधिकार के विषय आते हैं।

ट्रिपल तलाक के विषय में सुप्रीम कोर्ट ने उसे संविधान के विरुद्ध माना है और मुसलमानों ने इसको शरियत के अनुसार मानकर धर्म में दखल कहा है। इस केस में अनुच्छेद 25 पर विशद विवेचन है।

भारतीय दण्ड संहिता द्वारा मुसलमानों के दण्ड के कानून में दखल किया है। मुस्लिम कानून में (शरियत) चोरी करने वाले व्यक्ति को हाथ काटने की सजा है जबकि भारतीय दण्ड संहिता में मेल की सजा है। अतः यह उचित होगा कि अभियुक्त से यह पूछा जावे कि उसे सजा भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार दी जावे या धर्म (शरियत) के अनुसार।

सन 1985 में सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो के केस में तथा श्रीमती जोर्डन डेग के विवाद में समान नागरिक संहिता लागू करने की बात की है और इनके 10 वर्ष बाद भी इसे सरला मुदगल के केस में दोहराया है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि सन्ध् सभाज में धर्म व वैयक्तिक कानून में कोई संबंध नहीं है। बहुविवाह लोक नीति के विरुद्ध है। देश में गोवा में समान नागरिक संहिता लागू है और उत्तराखण्ड भी इस ओर बढ़ रहा है।

विधि आयोग व विधि आयोग के अध्यक्ष ने अलग-अलग विचार अभिव्यक्त किये हैं। पूर्व मुख्य न्यायाधीश व विधि आयोग के चेयरमैन गजेन्द्र गडकर ने विधि आयोग के अध्यक्ष के रूप में कहा था, ‘अनुच्छेद 44 को लागू न करना भारतीय डेमोक्रेसी की असफलता है।’ जस्टिस छागला ने कहा कि ‘अनुच्छेद 44 को बाध्यकारी मानना चाहिये।’

देश सेक्युलर है अतः समान नागरिक संहिता का संविधान में प्रावधान उचित है। समान नागरिक संहिता कई देशों में है। ब्रिटेन, फ्रान्स, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, गोवा, आयरलैंड, बंगलादेश, मलेशिया, तुर्की, इण्डोनेशिया, सुडान, मिश्र, पाकिस्तान आदि देश में यह समान नागरिक संहिता लागू है।

हर धर्म, जाति के लिये यह कानून है, कई मुस्लिम देशों में भी यह लागू है। बंगलादेश, पाकिस्तान तो कभी भारत के ही अंग थे वहां भी यह लागू है। इससे पुरुष व महिला दोनों को तलाक का अधिकार मिलेगा। शादी की उम्र बढ़ेगी, जिसके कारण महिला शादी से पूर्व ग्रेजुवेट हो सकेगी। समान नागरिक संहिता लागू होने से ऐसे सभी कानून समाप्त हो जावेंगे जिसमें लैंगिक पक्षपात दिखाई देता है। जब मुस्लिम देशों में यह सफलता के साथ लागू है कि भारत में इसका विरोध क्यों हो? कई कानूनों का सरलीकरण होगा और विवादों में समझौता हो सकेगा बहुविवाह रूकेगा।

विधि आयोग ने 31.8.2018 में फिनाली सुनवाई में सुधार के हेतु एक Consultation Paper भेजा था। विधि आयोग ने अपनी अधूरी रिपोर्ट में कहा, Formulation of a Uniform Civil Code (UCC) is neither necessary nor desirable at this stage। चूंकि तीन वर्ष से अधिक होने के बाद भी विषय पर कोई काम नहीं हो सकता यद्यपि हित रखने वाले सभी लोगों को प्रश्नावली भेजी थी। इस कार्य में तीन वर्ष का समय हो चुका था अतः 22वें लॉ कमीशन ने पुनः प्रश्नावली भेजी है और 30 दिन में उत्तर, रिप्रेजेंटेशन, अपील आदि भेजने को लिखा है। इसके अतिरिक्त Woring Paper भी भेजा जा सकता है। विधि आयोग ने निम्न पते पर अपना उत्तर भेजने का आग्रह किया है:—

Member Secretary, Law Commission of India, 4th Floor, Lok Nayak Bhawan, Khan Market, New Delhi 110003

लॉ कमीशन ने व्यक्तिगत सुनवाई के लिये भी लिखा था।

यहां यह लिखना समीचीन होगा कि द्वितीय विधि कमीशन पुनः सुनवाई की कार्यवाही करेगा ऐसा उनकी विज्ञप्ति/आदेश दिनांक 14.06.2023 से मालूम होता है कि सुनवाई पूर्ववर्ती विषय पर ही होगी Formulation of a Uniform Civil Code (UCC) is neither necessary nor desirable at this stage-

लॉ कमीशन की दोनों रिपोर्ट्स (Reports) न तो रेफरेंस के अनुरूप हैं और न आदेश है। उनकी इन्हटु का कोई आधार भी नहीं है। वह अवैध व अधिकर शुन्य है। न तो ये कमीशन को रिपोर्ट है और न निर्णय ही। चूंकि विधानसभा ने अनुच्छेद 44 को पारित किया है अतः यह कहना कि यूसीसी की न तो आवश्यकता है और न कोई औचित्य।

इलेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना तौकर राजाखान ने यह राय दी है कि यूसीसी लागू करना भाजपा के लिये चुनाव जीतने का एक टूल है वहीं मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने कहा है कि समान नागरिक संहिता गैरजरूरी, अव्यावहारिक और देश के लिए हानिकारक है।

लेखक ने समान नागरिक संहिता पर शायद 4-5 लेख लिखे हैं। प्रत्येक लेख में नवीनता लाने का प्रयास है। लेखक का अपना विचार है कि अनुच्छेद 44 यद्यपि संविधान के भाग 4 का एक अभिन्न अंग है और अनुच्छेद 37 के होते हुये भी प्रवर्तनीय है क्योंकि भाग 4 के विषयों पर कई कानून बन चुके हैं जो देश के शासन में मूलभूत हैं, अतः तत्वों को लागू करना राज्य का कर्तव्य है। अनुच्छेद 44 संविधान का मॉड्यूल है अतः इसे संशोधित नहीं किया जा सकता और न इसे संविधान से हटाया जा सकता है। चूंकि लॉ कमीशन ने अपनी प्रश्नावली भेज दी है अतः हित रखने वालों को अपना पक्ष रखना चाहिये साथ ही लॉ कमीशन के अधिकार क्षेत्र को भी चुनौती देना चाहिये।

—अतिथि सम्पादक, पानाचन्द जैन

पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

26 घण्टे अखण्ड सूर्य नमस्कार करके आयुर्वेद विश्वविद्यालय ने कीर्तिमान बनाया

जोधपुर, (कासं)। “कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं होता, कोई तबीयत से पत्थर तो उछालो यारों” की कहावत चरितार्थ की है, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर ने अखण्ड सूर्य नमस्कार का विश्व कीर्तिमान स्थापित करके।

9वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आमजन को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से आयुर्वेद विश्वविद्यालय के उत्साही और संकल्पबद्ध शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा जोधपुर शहर के हृदय-स्थल घण्टाघर पर 26 घण्टों तक सर्वाधिक अवधि का निरन्तर अखण्ड सूर्यनमस्कार करके आज विश्व कीर्तिमान रचा गया है। कुलपति प्रो. वैद्य प्रदीप कुमार प्रजापति की प्रेरणा

■ 21 जून प्रातः से प्रारंभ हुआ अखण्ड सूर्य नमस्कार 26 घण्टों तक सर्वाधिक अवधि तक निरन्तर जारी रहा

से बुधवार को प्रातः 8.30 बजे से घण्टाघर पर आरंभ हुये अखण्ड सूर्य नमस्कार कार्यक्रम का गुरुवार को प्रातः 10.30 बजे समारोहपूर्वक समापन हुआ।

समारोह की मुख्य अतिथि राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष संगीता बेनीवाल ने समारोह को संबोधित करते हुये विश्वविद्यालय द्वारा संचालित लोकप्रिय कार्यक्रमों स्वर्णप्राशन, पंचकर्म, क्षारसूत्र एवं योग की प्रशंसा करते हुये आज अखण्ड सूर्यनमस्कार के विश्व कीर्तिमान रचने के लिये विश्वविद्यालय को बधाई दी। ट्रैफिक पुलिस अधिकारी निशा भटनागर समारोह की विशिष्ट अतिथि थी। कार्यक्रम के प्रारंभ में कुलसचिव



जोधपुर के घण्टाघर पर 26 घण्टों तक सर्वाधिक अवधि का निरन्तर अखण्ड सूर्य नमस्कार करके विश्व कीर्तिमान रचा गया।

सीमा कविया एवं प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा ने अतिथिगण का साफा एवं पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति ने सर्वाधिक अवधि अखण्ड सूर्यनमस्कार का विश्व कीर्तिमान स्थापित करने के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के साथ-साथ जोधपुर की जनता को बधाई दी।

कुलपति प्रो. प्रजापति ने योग प्रभारी एवं सूर्यनमस्कार कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. चन्द्रभान शर्मा एवं कार्यक्रम में सहभागी बने डाबर इंडिया लिमिटेड के अधिकारी प्रहलाद राय को समारोह में सम्मानित किया। समारोह में प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये योग प्रभारी डॉ. चन्द्रभान शर्मा ने बताया कि घण्टाघर में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त राज्य

की सभी 40 आयुष महाविद्यालयों तथा विद्याभारती से जुड़ी विद्यालयों के लगभग 9000 हजार छात्र-छात्राओं ने भी सूर्यनमस्कार करते हुए वचुंअल माध्यम से सहभागिता की। उन्होंने बताया कि शहर के योग विशेषज्ञों चेतन प्रकाश सेन, प्रेमरतन सोतवाल, रमेश चन्द्र शर्मा, मंगलाराम आदि ने घण्टाघर पर आकर संभागियों का उत्साहवर्धन किया। डीन रिसर्च एवं मीडिया प्रभारी प्रो. प्रेम प्रकाश व्यास ने बताया कि इस कीर्तिमान के आयोजन में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों, शहर के योगसाधकों एवं विदेशी पर्यटकों सहित लगभग 200 व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. महेन्द्र शर्मा, डीन रिसर्च प्रो. प्रेम प्रकाश व्यास, परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजाराम अग्रवाल, डीन एकेडमिक डॉ. राजेश

कुमार शर्मा, चीफ वार्डन प्रो. चन्दनसिंह, चिकित्सालय अधीक्षक प्रो. प्रमोद मिश्रा, शल्य तंत्र विभागाध्यक्ष प्रो. राजेश गुप्ता, प्रसूति तंत्र एवं स्त्री रोग विभागाध्यक्ष डा. ए. नीलिमा, रोग विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. गोविन्द गुप्ता, स्त्वस्ववृत्त विभागाध्यक्ष डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा, मौलिक सिद्धान्त विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र चाहर, मानव संसाधन विकास केन्द्र के निदेशक डा. राकेश शर्मा, फार्मसी निदेशक डा. विजयपाल त्यागी, प्रशासन विभागाध्यक्ष डॉ. ज्ञानप्रकाश शर्मा, अगद तंत्र विभागाध्यक्ष डॉ. ऋतु कपूर, पंचकर्म विशेषज्ञ प्रो. महेश शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. दिनेश शर्मा, डॉ. अरूण दाधीच, डॉ. श्योराम शर्मा, डॉ. संजय श्रीवास्तव, डॉ. मोनिका वर्मा, डॉ. रश्मि शर्मा, डॉ. मनोभा गोयल, डॉ.

दिनेश राय, डॉ. गजेन्द्र दुबे तथा सहायक प्रोफेसर डॉ. राजीव सोनी, डॉ. अशोक यादव, डॉ. नवनीत दाधीच, डॉ. पूजा पारिक, डॉ. भानू प्रिया, डॉ. प्रियंका इनाणिया, डॉ. हेमन्त राजपुरोहित डॉ. अवधेश, होम्योपेथी प्राचार्य डा. गौरव नागर, डॉ. राजीव खन्ना, डॉ. राजेश कुमारवत, डॉ. नरेन पटवा, डॉ. अभिषेक भारद्वाज, डॉ. यशस्वी तथा योग प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. धन्या सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकगण सहित स्नाश्रकोतर तथा पी एच डी अध्येतागण उपस्थित थे। कुलसचिव श्रीमती सीमा कविया ने सहयोग के लिए पुलिस प्रशासन, नगर निगम प्रशासन, मीडिया तथा जोधपुर की जनता का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. प्रेम प्रकाश व्यास तथा डॉ. दिनेश शर्मा ने किया।

मॉडिफाईड गाड़ी से 1111 दिन की यात्रा पर निकले मेहता दंपती जालोर पहुंचे

जालोर, (कासं) जयपुर के एक दम्पती अपना शोक पूरा करने के लिए पूरे भारत घूमने के लिए 1111 दिन की यात्रा पर निकले हैं। यात्रा के लिए इन्होंने गाड़ी मॉडिफाई करवाई, ताकि होटल की जरूरत यात्रा के दौरान नहीं पड़े।

जयपुर निवासी 64 वर्षीय अनिल मेहता अपनी 57 वर्षीय पत्नी गीता के साथ 1111 दिन के लिए पूरे भारत की यात्रा पर निकले हैं। अनिल बताते हैं उन्हें घूमने का शोक है। इसलिए वे अक्सर ट्रेवल करने निकले जाते हैं। लेकिन शोक के चलते इस बार उन्होंने कुछ अलग करने की सोची। वे अपनी पत्नी के साथ पूरे 1111 दिन भारत के विभिन्न हिस्सों में बितायेगे। 23 अप्रैल को उन्होंने अपने सफर की शुरुआत की थी। खास बात यह है कि वे इस दौरान किसी होटल में नहीं



1111 दिन की यात्रा पर निकले मेहता दम्पती जालोर पहुंचे।

उहरेंगे। वे जयपुर से गोवर्धन, मथुरा, मुरादाबाद, कुमाउ, दिल्ली, अजमेर, पुष्कर, बुटारी, जोधपुर होते हुए जालोर पहुंचे हैं। दम्पती ने होटल में नहीं उहरने के लिए एक गाड़ी को

मॉडिफाई करवाई। करीब डेढ लाख रुपये से 37 दिन में उनकी गाड़ी इस दूर के लिए तैयार की गई है। उन्होंने अपनी गाड़ी को इस तरह मॉडिफाई करवाया कि गाड़ी में ही बेड लगा है।

जहां वे आराम करते हैं। गाड़ी में बैड की सुविधा के अलावा खाना बनाने के लिए एक छोटा कीचन भी है। साथ ही उन्होंने सोलर प्लेट लगवाई है। जिससे जरूरी कार्य के लिए उन्हें बिजली मिल

■ 23 अप्रैल को अपने सफर की शुरुआत की थी, खास बात यह है कि वे इस दौरान किसी होटल में नहीं उहरेंगे

■ मेहता दम्पती 1111 दिन का दूर कर लिफ्टा बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड दर्ज करवाना चाहते हैं

सके। गाड़ी में एक टायलेट भी है व उनके पास हमेशा पानी का स्टोरेज भी रहता है। मेहता दम्पती 1111 दिन का दूर कर लिफ्टा बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड दर्ज करवाना चाहते हैं।

उमस और गर्मी से उल्टी, दस्त और बुखार के मरीज बढ़े

पावटा, (निर्सं)। गर्मी और उमस का लोगों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा व निजी अस्पतालों की ओपीडी में उल्टी, दस्त, बुखार, सांस रोग, खून की कमी, लीवर में पानी की कमी के मरीजों की संख्या बढ़ी है।

अस्पताल में पहले फिजिशियन से जांच करने के लिए करीब 450 तक मरीज पहुंचते थे लेकिन यह संख्या अब बढ़कर लगभग 650 से अधिक हो चुकी है। उमस के कारण अब लोग पसीने से तरबतर हो रहे हैं। जांच करवाने के लिए सुबह से ही मरीजों की अस्पतालों में लंबी कतार



अस्पताल में मरीज को देखते चिकित्सक।

लगना शुरू हो जाती है। अस्पताल की ओपीडी में अब फिजिशियन के पास

ही सबसे अधिक मरीज जांच करवाने के लिए कतार में लगे हुए दिखाई देते

■ अस्पताल में पहले करीब 450 तक मरीज पहुंचते थे लेकिन यह संख्या 650 से अधिक हुई

है। वहीं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा प्रभारी देवेन्द्र शर्मा, डॉ. अशोक बाज्या व गुप्ता हॉस्पिटल से डॉ. रवि अंजली गुप्ता, एसजीएन हॉस्पिटल निदेशक डॉ. जय राम यादव, डॉ. दर्शन परिधा, मैक्स संजीवनी हॉस्पिटल से डॉ. सुरेंद्र यादव ने बताया कि मौसम में बदलाव के बाद ओपीडी में पहले

से मरीजों की संख्या बढ़ी है। गर्मी के कारण उल्टी, दस्त और बुखार के मरीज अधिक आ रहे हैं।

गर्मी से बचाव करें व पेय पदार्थों का अधिक सेवन कर खुद को लोग स्वस्थ रखें। मरीजों को गर्मी से बचाव के लिए धूप में कम से कम बाहर निकलें, गर्मी में अधिक से अधिक पानी का सेवन करें, जूस, नींबू पानी, शिर्कजी व अन्य पेय पदार्थों का अधिक सेवन करें, तंद और फास्ट फूड का सेवन न करें, पेट दर्द, सिर दर्द व अन्य किसी तरह की दिक्कत आती है तो डॉक्टर की सलाह लेने की बात कही।

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2080, मघा नक्षत्र शनिवार प्रातः 7:18 तक, वैश्व योग रात्रि 4:31 तक, बव करण प्रातः 6:41 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरु-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।
आज कुमार योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज स्कन्ध पंचमी, द्वारकाधीश पाटोत्सव, साईं टेऊर्राम जयन्ती, हेरा पंचमी है।
सर्वश्रेष्ठ चीघड़िया: चर सूर्योदय से 7:21 तक, लाभ-अमृत 7:21 से 10:46 तक, शुभ 12:29 से 2:12 तक, चर सूर्य 5:37 से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:20

मेघ

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियावन्धन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यवसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु

धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

फर्जी कम्पनी बनाकर 3000 से भी ज्यादा लोगों के साथ करोड़ों की ठगी

इनामी ड्रॉ खोलने का झांसा देकर ठगी करके कंपनी का मालिक परिवार सहित फरार

पुष्कर, (निसं)। धार्मिक नगरी पुष्कर में बीते कुछ सालों से फर्जी कंपनियों की आड़ में लाखों रुपयों के इनामी लक्की ड्रॉ खोले जाने का झांसा देकर हजारों लोगों से हर महीने लाखों करोड़ों रुपये इकट्ठे करने का गोरखधंधा चल रहा है।

ऐसा ही एक मामला हरि ॐ एंटरप्राइजेज के नाम से तीन साल पहले एक फर्जी कम्पनी बनाकर 3000 से भी ज्यादा लोगों के साथ करोड़ों रुपयों की ठगी करने का मामला उजागर हुआ है। जिसके पश्चात पुष्कर सहित आसपास के

ग्रामीण इलाकों में खलबली मच गई। मामला उजागर होने के बाद पीड़ित रामचन्द्र चौहान, कल्याण सिंह, महेश पाराशर, पंकज, भारगाम सहित कई लोगों सामूहिक की रिपोर्ट पर पुष्कर पुलिस ने ठगी के आरोपी गोपाल उदय सहित इसके परिवारजनों के खिलाफ जालसाजी और धोखाधड़ी करने का मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

ठगी के शिकार हुए पीड़ित रामचन्द्र चौहान ने पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया कि गोपाल पुत्र मांगीलाल उदय विगत 15 अक्टूबर

2020 को मेरे घर आया और मुझे हरि ॐ एंटरप्राइजेज कम्पनी बनाकर उसमें अगले 30 महीनों तक हर माह 1000 रुपये जमा करवाने की बात कही। साथ ही कम्पनी के द्वारा हर महीने उसके हजारों लाखों रुपये के इनाम भी लक्की ड्रॉ स्किम के तहत बांटे जाने की जानकारी दी।

जिसके झांसे में आकर ना सिर्फ रामचंद्र ने बल्कि उसके मिलने वाले कई लोगों ने गोपाल उदय से जुड़कर हर महीने पैसे जमा करवाने शुरू कर दिए। अकेले रामचंद्र के मिलने वाले 23 लोगों ने ही ढाई साल के दौरान

साढ़े सात लाख रुपये जमा करवा दिए। जानकारी के अनुसार इस स्कीम में पुष्कर सहित आसपास के इलाके के रहने वाले तीन हजार से ज्यादा लोगों ने 30-30 हजार रुपये गोपाल उदय के शोरूम पर जाकर जमा करवाये थे। जिसको जोड़ा जाए तो मामला 9 से 10 करोड़ रुपयों की ठगी का होता है।

पुष्कर हॉस्पिटल के सामने स्थित ऑफिस पर अब ताला लगा हुआ है। जानकारी में आया कि विगत 15 दिनों पूर्व ही आरोपी गोपाल उदय ऑफिस में ताला लगाकर परिवार

सहित कहीं फरार हो गया है। गोपाल उदय सहित उसकी पत्नी नीरू, भतीजा जीतू एवं लक्की सहित अन्य परिवार जनों के मोबाइल फोन भी स्विच ऑफ कर दिए गए हैं। बीते 15 दिनों से अपने पैसे वापस लेने के लिए चक्कर लगा रहे हजारों पीड़ित लोग परेशान हो रहे हैं और अब अपने आपको ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। यही वजह है कि थक हारकर परेशान होने का बाद आज एक पीड़ित रामचन्द्र चौहान ने पुष्कर थाने पहुंचकर उसके साथ ठगी किये जाने का मामला दर्ज करवाया है।

तस्कर को 13 वर्ष का कारावास

हिण्डौन सिटी, (निसं)। कलौली ज़िले में बढ़ते नशे के कारोबार की रोकथाम के लिए अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश क्रम संख्या 1 हिण्डौन सिटी सीताराम मीणा ने वर्ष 2020 के एक प्रकरण में सजा सुनाते हुए टोडाभीम निवासी नशीली दवाओं के एक तस्कर को 13 वर्ष के कठोर कारावास एवम 1.5 लाख के अर्थदण्ड से दण्डित किया है।

अपर लोक अभियोजक दिनेश चंद शर्मा ने बताया कि टोडाभीम थाना प्रभारी मनोहर लाल मीणा ने एक मुकदमा

402/2020 टोडाभीम थाने पर दर्ज कराया । जिसमे गश्त के दौरान नाहरकोटा मोड़ पर एक संदिग्ध व्यक्ति एक कट्टे के साथ मिला जो कि पुलिस जाबे को देखकर भागने लगा। जिस पर शक होने पर पुलिस द्वारा घेराबंदी कर पकड़ा गया और उसके पास कट्टे की तलाशी ली गई तो उसमें विभिन्न कंपनियों की सैकड़ों की संख्या में नशीली टेबलेट और सौरप मिले। जिनको रखने के लिए उक्त व्यक्ति के पास कोई वैध दस्तावेज नहीं मिला। व्यक्ति को गिरफ्तार कर

न्यायालय में पेश किया गया। मामले में विचारन के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से कुल 13 गवाह के बयान लेकर किए गए और कुल 51 दस्तावेज प्रदर्श किए गए। मामले में सुनवाई के बाद मुलाजिम मुकेश कुमार सैनी पुत्र चतरू राम सैनी निवासी हाई स्कूल के पास काजीपाड़ा टोडाभीम पर आरोप साबित होने पर न्यायालय द्वारा कठोर कारावास एवं अर्थदंड एवं जुर्माना जमा नहीं कराने की दशा में 6 माह के अतिरिक्त कारावास से दंडित किया है।

बाड़मेर, चौहटन और सांचोर पहुंचे डॉ. सतीश पूनियां, बिपरजाँय तूफान से प्रभावित क्षेत्रों का जमीनी दौरा किया

मुख्यमंत्री ने हवाई सर्वे किया, अब जमीनी सर्वे भी कर लें : डॉ. सतीश पूनियां

जयपुर, बाड़मेर, जालोर। बिपरजाँय तूफान से प्रभावित क्षेत्रों का जमीनी दौरा करने गुरुवार को राजस्थान विधानसभा उपनेता प्रतिपक्ष एवं भाजपा पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां दिनभर बाड़मेर और जालोर जिलों के प्रवास पर रहे, जहां उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों का जमीनी दौरा कर बिपरजाँय तूफान से प्रभावित जमीनी हालात की पीड़ित लोगों से मुलाकात कर जानकारी ली।

डॉ. सतीश पूनियां ने बाड़मेर जिले में चौहटन, गंगासरा, बावतलाई और जालोर जिले में वेडिया, सूखडी, खासरवी, सरवाना, सांचौर में बिपरजाँय तूफान से प्रभावित क्षेत्रों का जमीनी दौरा कर मकान, जनहानि और पशुधन के नुकसान की जानकारी ली। उन्होंने सांचौर विधानसभा के नेहड़ क्षेत्र के वेडिया गांव से जालोर जिले में प्रवेश कर, विधानसभा के सूखडी और खासरवी गांव में बाढ़ से प्रभावित गौशालाओं का निरीक्षण किया तथा केसुरी गांव में बाढ़ से पीड़ित परिवारों के घरों में जाकर संभाल ली। सरवाना गांव में किसान बंधुओ से भेंट कर उनकी समस्याओं को सुना तथा सांचौर शहर के व्यापारी वंधुओ से भी भेंट कर बाढ़ में हुए व्यापारिक नुकसान की जानकारी ली।

उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि, बिपरजाँय तूफान से बाड़मेर, जालोर, पाली, सिराही, जोधपुर इत्यादि जिलों में कच्चे झोंपड़ों से लेकर मकानों

तक कई जगह जनहानि हुई है। मैंने कल मुख्यमंत्री का टवीट देखा, श्रीमान हेलिकॉप्टर में बिराजे थे, आसमान से जमीन की तरफ देख रहे थे। टवीट में लिखा था कि, मकान डूबे हैं, उम्मीदें नहीं डूबने दूंगा, मैंने उनके टवीट पर लिखा कि कांग्रेस शासन में मकान भी डूब गये और अवाम की उम्मीदें भी डूब गईं। लेकिन बिपरजाँय तूफान के कारण राजस्थान के विभिन्न अंचलों में बाड़मेर, पाली, जालोर, सिराही, जोधपुर और अजमेर में जिस तरीके के हालात बने हैं, उससे एक बात तो स्पष्ट हो गई कि क्योंकि जब इस तरीके से कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो लोग कहते हैं कि रामजी की मर्जी हैं, लेकिन जब लोग निराश होते हैं तो लोग कहते हैं कि रामजी रूठ गये और राज भी रूठ गया।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने हम्वाई सर्वे तो किया लेकिन उस हवाई सर्वे में बाढ़ में डूबे लोगों के आंसू नहीं दिखे होंगे और जिस तरीके से लीपापोती की, सियासी बयान दिये, उससे बाढ़ राहत भी मरगाई राहत की तरह खोखली साबित हो गई। यह बात ठीक है कि यह प्राकृतिक आपदा है, पर अब समय विज्ञान और तत्ककी का है, पूर्वानुमान बहुत पहले से आ जाते हैं, मेघालय से भी ज्यादा उसके समकक्ष 300 मिलीमीटर से भी ज्यादा बारिश प्रदेश में कई स्थानों पर हुई। एक अनुमान है कि 10 हजार मकानों से लेकर 50 हजार



भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनियां ने सांचोर में बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया।

कच्चे झोंपड़ों से लेकर, मवेशियों से लेकर और तालाब में डूबने से जनहानि हुई है। अशोक गहलोत ने जो बयान दिये उसमें कहीं लगा ही नहीं कि उनको कोई संवेदना है और ना ही राज्य सरकार ने तत्परता से कोई काम किया। हेलिकॉप्टर का दौरा तो सामान्य रूप से कोई भी कर सकता है, लेकिन क्या उस अंतिम व्यक्ति तक रिलीफ पहुंची है क्या?

उन्होंने कहा कि कई जगह से यह जानकारी मिल रही है कि कई-कई दिनों तक पानी है, जिससे बीमारियां फैलने का अंदेश है, कई लोगों तक भोजन

‘दुर्घटना में एयर बैग नहीं खुलना मैनुफैक्चरिंग डिफैक्ट’

राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग ने यह कहते हुए एक प्रतिष्ठित कार कम्पनी को 20 लाख रू. मुआवजा देने का आदेश दिया

जोधपुर, 22 जून (कासं)। कार चलाते समय सीट बेल्ट लगे होने के बावजूद दुर्घटना में एयरबैग नहीं खुलने पर चालक की मौत को कार में उत्पादकीय त्रुटि मानते हुए राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग के अध्यक्ष देवेन्द्र कच्छवाहा और सदस्य निर्मल सिंह मेडतवाल व लियाकत अली ने परिवार मंजूर करते हुए देश की नामी निर्माता कम्पनी को आदेश दिया है कि, परिव्रादी को 45 दिवस में मुआवजा 20 लाख रुपए, मानसिक संताप के लिए 50 हजार रुपए और परिव्राद व्यय 50 हजार रुपए अदा करें।

जोधपुर निवासा नीतू ने अधिवक्ता अनिल भंडारी के माध्यम से परिव्राद दायर कर कहा कि, उनके पति वीरेंद्र सिंह ने 2 मई 2012 को करीब दस लाख रुपए की कार खरीदी, जिसमें एयरबैग भी लगे हुए थे।उन्होंने कहा कि, 27 दिसंबर 2012 को उनके पति सीट बेल्ट लगाकर जोधपुर से 3 अन्य व्यक्तियों के साथ जा रहे थे, नागौर में अज्ञात वाहन से दुर्घटना होने के कारण उनकी कार सड़क किनारे लगे हुए लोहे के साइन बोर्ड से टकराई

■ **जोधपुर निवासी नीतू ने दुर्घटना में कार के एयर बैग नहीं खुलने से हुई अपने पति की मृत्यु के लिए कार निर्माता कम्पनी को जिम्मेदार ठहराते हुए राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग में केस दर्ज किया था।**

और दो तीन बार पलटी भी खाई, दुर्घटना में चारों की मौके पर ही मृत्यु हो गई। अधिवक्ता भंडारी ने बहस करते हुए कहा कि, बाकी तीनों के परिजनों ने मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण में दावा किया है, लेकिन वीरेंद्र सिंह, जो कि स्वयं ही कार चला रहे थे और सीट बेल्ट लगी होने के बावजूद कार के एयरबैग नहीं खुले जिससे उनका भी निधन हो गया। इसलिए एयरबैग नहीं खुलना उत्पादकीय त्रुटि है और इसके लिए कार निर्माता पूर्णतया जवाबदेह और जिम्मेदार है, क्योंकि एयरबैग खुलने की दशा में परिव्रादी के पति की जान बच सकती थी।

दोनों पक्षों के तर्क सुनने के बाद राज्य आयोग ने परिव्राद मंजूर करते हुए कहा कि, यह निर्विवाद है कि दुर्घटना में 40 वर्षीय कार चालक की मृत्यु एयरबैग नहीं खुलने से हुई

है और बीमा कंपनी ने कार की क्षति टोटल लॉस मानते हुए कार का दावा अदा किया है और कार का आगे का हिस्सा भी काफी क्षतिग्रस्त हुआ है। उन्होंने कहा कि दुर्घटना के समय कार चालक के सीट बेल्ट लगे होने पर भी एयरबैग नहीं खुलना निश्चित तौर कार की उत्पादकीय त्रुटि है और अतिसूक्ष्म व जटिल तकनीकी आधार पर परिव्राद को खारिज नहीं किया जा सकता है। आयोग ने परिव्राद मंजूर करते हुए कार निर्माता कंपनी को निर्देश दिया कि 45 दिवस में आय की क्षति के 20 लाख रुपए, मानसिक संताप के 50 हजार रुपए और परिव्राद व्यय के 50 हजार रुपए, कुल 21 लाख रुपए में से परिव्रादी को 15 लाख रुपए, मृतक के दोनों पुत्रों को दो दो लाख रुपए और माता पिता को एक एक लाख रुपए अदा करें।

गैंगरेप-हत्या मामला : फरार दोनों पुलिसकर्मी निलंबित

बीकानेर, (निसं)। दलित युवती से गैंगरेप और हत्या के मामले में जांच एएसपी ग्रामीण दीपक शर्मा को सौंपी गई है। जानकारी के अनुसार जब पिता इसकी शिकायत करने थाने गए तो मामला दर्ज करने की बजाय बैठक करके कोई काम किया है आज भी दरगाह परिसर की कई दीवारें, छत, जर्जर, पिल्लर अव्यवस्था में हैं। खादिम ने कहा कि ख्वाजा साहब की दरगाह में हर समय जायरीन की भीड़ रहती है।

जायरीन को अस्पताल पहुंचाया, जहां उसका उपचार चल रहा है। खादिम सैयद महाराज चिश्ती ने बताया कि दरगाह कमेटी को 4 बार शिकायत दी हैं उसके बाद भी दरगाह कमेटी ने अब तक कोई काम किया है। आज भी दरगाह परिसर की कई दीवारें, छत, जर्जर, पिल्लर अव्यवस्था में हैं। खादिम ने कहा कि ख्वाजा साहब की दरगाह में हर समय जायरीन की भीड़ रहती है।

पुलिसकर्मी निलंबित कर दिए गए। जांच एएसपी ग्रामीण दीपक शर्मा करेंगे। दिनेश विशोई का थाने में नियमित रूप से आना जाना था। सीआई अरविन्द सिंह के ट्रांसफर होने पर विदाई पार्टी में भी दिनेश शामिल था। सीआई को फूल देते का उसका फोटो भी सामने आया है। इतना ही नहीं पुलिस की गाड़ी में बैठकर दिनेश ने कई बार फोटो भी खिंचवाए। ये फोटो भी अब सामने आ रहे हैं। बताया जा रहा है कि दिनेश के साथ खाजुवाला थाने के कॉन्स्टेबल मनोज और भागीरथ के साथ एक और युवक पर रेप व हत्या का मामला दर्ज करवाया है।

इधर, मुख्य आरोपी दिनेश विशोई पिछले 10-15 दिन से युवती को परेशान कर रहा था। रेप और हत्या से कुछ दिन पहले ही ट्रांसफर हुए सीआई अरविन्द सिंह शेखावत पर भी अब इस केस में लापरवाही के आरोप लग रहे हैं। युवती अपने गांव से कम्प्यूटर कोर्स करने रोज सुबह कोचिंग सेंटर पर आती थी। आरोपी उसका पीछा करता था। उसने कोचिंग सेंटर और घर पर यह बात बताई। उसके बाद भाभी के साथ आने लगी, पर आरोपी बाज नहीं आया। युवती के भाई ने बताया कि थाने के सिपाही मनोज व भागीरथ भी आरोपी के साथ होते थे। सीआई से शिकायत भी की लेकिन कार्रवाई नहीं हुई।

तब ही आरोपियों पर कार्रवाई कर दी जाती तो उसकी बहन आज जिंदा होती। अब एएसपी व आईजी से सख्त कार्रवाई की मांग की है। युवती के पिता की रिपोर्ट पर कॉन्स्टेबल मनोज, भागीरथ सहित दिनेश विशोई व दो-तीन अन्य पर केस दर्ज हुआ है। दोनों

पुलिसकर्मी निलंबित कर दिए गए। जांच एएसपी ग्रामीण दीपक शर्मा करेंगे।

दिनेश विशोई का थाने में नियमित रूप से आना जाना था। सीआई अरविन्द सिंह के ट्रांसफर होने पर विदाई पार्टी में भी दिनेश शामिल था। सीआई को फूल देते का उसका फोटो भी सामने आया है। इतना ही नहीं पुलिस की गाड़ी में बैठकर दिनेश ने कई बार फोटो भी खिंचवाए। ये फोटो भी अब सामने आ रहे हैं। बताया जा रहा है कि दिनेश के साथ खाजुवाला थाने के कॉन्स्टेबल मनोज और भागीरथ भी उस कमरे में मौजूद थे, जहां दलित युवती का पहले रेप हुआ और बाद में हत्या कर दी गई। ये दोनों कॉन्स्टेबल ही उसे खाजुवाला के सरकारी अस्पताल लेकर आए, यहां भर्ती कराया और बाद में फरार हो गए। जो अब तक पकड़े नहीं गए हैं। पीड़ित पक्ष को 10 लाख रु. सरकारी सहायता व 15 लाख जन सहयोग से दी जाएगी। थाने के पूर्व सीआई सहित अन्य पुलिसकर्मियों की भूमिका की जांच करके उन्हें बर्खास्त किया जाए। युवती से गैंगरेप एक किराए के मकान में हुआ। एफएसएल टीम ने वहां से सबूत जुटाए हैं। बेड पर युवती का खून मिला है। यह मकान दिनेश के दोस्त जस्सा ने किराए पर लिया हुआ था। जबकि दोनों युवक खाजुवाला के हैं। ग्रामीणों का कहना है कि इस मकान में पुलिसवाले भी आते-जाते थे।

घटना का मुख्य आरोपी उधार देने वाले व्यापारी का नौकर ही निकला

कोटा, (निसं)। शहर में बुधवार को हुई ३1 लाख रुपए की लूट के मामले में पुलिस ने घटना के 24 घंटे पहले ही मामले का खुलासा कर दिया है। साथ ही इस वारदात में शामिल दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जिन्होंने इस लूट की वारदात को अंजाम दिया था। साथ ही अन्य आरोपियों के संबंध में पड़ताल आरोपियों से की जा रही है।

गिरफ्तार आरोपियों में घटना का मुख्य आरोपी उधार देने वाले व्यापारी का नौकर ही निकला है पुलिस अब गिरफ्तार आरोपियों को न्यायालय में पेश करेगी जहां से उनकी रिमांड मांगेगी रिमांड मिलने पर उससे अन्य आरोपियों के संबंध में भी पड़ताल करेगी। कोटा शहर के एसपी शरद चौधरी ने बताया कि बैग में रुपए लेकर जितेंद्र मेहता सिंधी कॉलोनी रावतभाटा रोड स्थित ज़िंदल सेल्स से निकला था। जिसे दुकान से चंद मिन्ट की दूरी पर ही कुछ लोगों ने पीछे से आकर चाकुओं से हमलाकर बैग छीनकर फरार हो गए थ।

इस मामले में कोटा शहर पुलिस पूरी मुस्तैदी से जांच में जुट गई थी।



कोटा पुलिस ने ३1 लाख रुपये की लूट करने के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

घटना के तथ्यों के अनुसार पुलिस अधिकारियों और साइबर सेल की टीम ने तकनीकी अनुसंधान के बाद दो आरोपियों को नामजद कर गिरफ्तार

किया है। इनमें कंसुआ शिव मंदिर के नजदीक रहने वाला विष्णु प्रजापत और उडिया बस्ती संजय नगर निवासी इनayat हुसैन शामिल था। पुलिस ने

इनayat हुसैन से 2.15 लाख रुपए भी बरामद कर लिए हैं। जबकि अन्य राशि के बारे में पड़ताल की जा रही है। एसपी चौधरी ने बताया कि मुख्य आरोपी

विष्णु प्रजापत, ज़िंदल सेल्स की दुकान पर ही काम करता है जिसे यह भी जानकारी थी कि उसके मालिक नितेश ज़िंदल से लोग राशि उधार लेकर जाते हैं। साथ ही इस राशि को एक-दो दिन में वापस लौटाकर भी जाते हैं।

इसी संबंध में सेठ नितेश ज़िंदल दिल्ली गए हुए थे और बुधवार को ही राशि कोई व्यक्ति को देनी थी। ऐसे में उसने पहले से ही इस राशि की लूट की योजना इरफान नाम के व्यक्ति के साथ मिलकर बना ली थी। साथ ही इस मामले में जितेंद्र के दुकान पर आने के समय इरफान को उसने सूचना भी दे दी थी। इस वारदात को अंजाम देने के लिए इरफान ने पूरी गैंग बना ली थी। जिसमें 5 से आदमी शामिल थे। जितेंद्र के दुकान से बाहर निकलने पर ही चाकू और बंदूक की नोक पर पैसा छीन लिया गया। इसमें जितेंद्र को चाकू मारकर गंभीर रूप से घायल भी कर दिया गया था। इनमें इरफान और अन्य लोग शामिल हैं।

संकेत संबंध में पड़ताल की जा रही है। साथ ही लूट की शेष राशि वारदात में प्रयुक्त वाहन और हथियार बरामदगी के प्रयास पुलिस कर रही है।

बेरोजगार युवाओं के साथ सरकार कर रही छलावा : देवनानी

‘कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को सरकारी खर्च पर बनाया जायेगा प्रेरक’

अजमेर, (कासं)। पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री और अजमेर उ्तर विधायक वासुदेव देवनानी ने राज्य सरकार की ओर से 50 हजार महात्मा गांधी सेवा प्रेरकों की नियुक्ति पर सवाल खड़े करते हुए आरोप लगाया कि चुनावी साल में इन नियुक्तियों के जरिए सरकार कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को सरकारी खर्च पर अपना प्रचार- प्रसार करवाने का जिम्मा सौंपने जा रही है।

देवनानी ने कहा कि सरकार बेरोजगार युवाओं के साथ छलावा कर रही है। देवनानी ने महात्मा गांधी सेवा प्रेरकों की नियुक्ति और उनके कार्यकाल अवधि पर भी सवाल खड़े किए और कहा कि सरकार को अगर वाकई में बेरोजगारों

की चिंता होती तो इन प्रेरकों का कार्यकाल महज एक वर्ष का ही क्यों रखा गया। साथ ही महज 4500 रुपए मासिक मानदेय दिया जाएगा। इससे स्पष्ट होता है कि सरकार की मंशा बेरोजगारों को राहत देने की जगह अपने कार्यकर्ताओं को चुनावी साल में सरकारी खर्च पर उपकृत करना है। देवनानी ने आरोप लगाया कि चयनित प्रेरकों को गांधी दर्शन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल किया जायेगा जहां खुद कांग्रेसी कार्यकर्ता पहले से बैठे हुए हैं। देवनानी ने कहा कि बीते साढ़े चार साल में 18 भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक हो चुके हैं। आरपीएससी और अधिनस्थ बोर्ड की कार्यप्रणाली भी

सवालों के घेरे में है। पेपर लीक कांड में आरपीएससी का सदस्य को गिरफ्तार होना चिंताजनक विषय है। सदस्य द्वारा करोड़ों रुपए लेकर, पेपर लीक सरगनाओं को पेपर बेचा गया। जांच के नाम पर कांग्रेस सरकार के द्वारा लीपापोती होती है। सरकार बेरोजगारों के मुद्दे पर कतई संवेदशील नहीं है। भर्ती परीक्षाएं समय पर पूरी नहीं हो रही जिसके चलते कई युवा ओवरएज हो रहे हैं। भर्ती परीक्षाओं को पूरा होने में औसतन दो से तीन साल लग रहे हैं। पेपर लीक के लंबित प्रश्नों पर विवाद और कोर्ट में लंबित मामलों के चलते प्रदेश का युवा बेरोजगार वर्ग हताश और निराशा में डूबता जा रहा है।

नशा तस्कर को भेजा जेल

हनुमानगढ़, (निसं)। 10 ग्राम हेरोइन बरामदगी के मामले में गिरफ्तार युवक को कोर्ट ने जेल भेज दिया है। जंक्शन पुलिस थाना प्रभारी नरेश गेरा के नेतृत्व में पुलिस टीम रात को गश्त कर रही थी। गश्त के दौरान पुलिस टीम रीको इंडस्ट्रीयल एरिया फेज 2 में पहुंची तो एक युवक की गतिविधियां संदिग्ध लगीं।

पुलिस ने बुधवार को कोर्ट में पेश कर एक दिन का पीसी रिमांड मंजूर करवाई थी। जंक्शन पुलिस थाना प्रभारी नरेश गेरा के नेतृत्व में पुलिस टीम रात को गश्त कर रही थी। गश्त के दौरान पुलिस टीम रीको इंडस्ट्रीयल एरिया फेज 2 में पहुंची तो एक युवक की गतिविधियां संदिग्ध लगीं।

शक होने पर पुलिस ने तलाशी ली तो युवक के कब्जे से 10 ग्राम हेरोइन मिली थी। पुलिस ने हेरोइन बरामद कर मौके से शक्तिर हुसैन को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी युवक के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच टाउन पुलिस को सौंपी है।

सरकार के घोटालों की एफ.आई.आर.कराने की मांग कर रहे सांसद किरोड़ी मीणा को गिरफ्तार किया

जयपुर। गहलोत सरकार के जलदाय विभाग में 20 हजार करोड़ व खान विभाग में 66 हजार करोड़ रुपए के खनन घोटाले का गंभीर आरोप लगाकर घोटालों की एफआईआर दर्ज कराने की मांग को लेकर दो दिन से धरने पर बैठे सांसद किरोड़ी लाल मीणा को आज सुबह अशोक नगर थाने की पुलिस ने गिरफ्तार किया।

इसके पहले सांसद मीणा करीब 1 घंटे थाने के समीप ही सड़क पर बैठ गए। इस दौरान पुलिस ने समझाइश की। बाद में पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर चाकसु थाने ले गई। इस दौरान चाकसु थाने के बाहर सांसद मीणा के सैकड़ों समर्थक इकट्ठा हो गए जिन्होंने गहलोत सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस दौरान चाकसु थाने में नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ भी पहुंचे। इस दौरान सांसद मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की पुलिस मेरी आवाज को दबा नहीं सकती। मीणा ने कहा कि सरकार में हुए घोटालों के लिए पहले भी लड़ा था, अभी भी लड़



अशोक नगर थाने के बाहर से पुलिस ने जब सांसद किरोड़ी लाल मीणा का धरना स्थल और उस पर लगे टेट को हटाया तो वे नाराज होकर बीच सड़क पर धरना देने बैठ गये।

रहा हूं और आगे भी लड़ूंगा।

सांसद मीणा ने कहा कि मैं प्रध्ताचार

के मामले को लेकर अशोक नगर थाने में एफआईआर दर्ज करवाने के लिए

शांतिपूर्ण तरीके से धरने पर बैठा था। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की गहलोत

■ ‘गहलोत की पुलिस मेरी आवाज को दबा नहीं सकती, परिवारी की सुनवाई करने के बजाय सीएम ने पुलिस से गिरफ्तार कराया’

सरकार दावा करती है कि हम परिवारी की तुरंत एफआईआर दर्ज करते हैं लेकिन सीएम गहलोत ने एफ आई आर दर्ज करवाने की बजाय धरना स्थल से गिरफ्तार करवा लिया। नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने चाकसु थाने पहुंचकर कहा कि शुक्रवार को राज्यपाल कलराज मिश्रा को इस अन्याय के खिलाफ ज्ञापन देंगे। इसके बाद भारतीय जनता पार्टी राजस्थान की कोर कमटी बैठकर इस मामले में आगे की रणनीति की रूपरेखा तैयार करेंगे। इसके बाद डॉ मीना और सैकड़ों समर्थक थाने से रवाना हुए।

‘ भाजपा-आरएसएस नहीं, गहलोत सरकार की तुष्टीकरण नीति दंगों के लिए जिम्मेदार’

केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा, “ चुनाव आते ही गोभक्त हो जाते हैं मुख्यमंत्री”

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की आरएसएस और भाजपा पर की गई टिपण्णी को लेकर केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने पलटवार किया। शेखावत ने कहा कि आरएसएस और भाजपा के खिलाफ आज तक दंगे भड़काने का कोई प्रमाण नहीं मिला है, जबकि गहलोत सरकार की तुष्टीकरण नीति राजस्थान में दंगों के लिए जिम्मेदार है। कांग्रेस की धार्मिक भेदभाव की सोच और प्रशासन की हिलाई जिम्मेदार है।

गुरुवार को अपने बयान में केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि भाजपा-आरएसएस दंगों की राजनीति में विश्वास नहीं करते। भाजपा-आरएसएस के खिलाफ आज तक दंगे भड़काने का कोई प्रमाण नहीं मिला है, जबकि गहलोत सरकार की तुष्टीकरण नीति के चलते पहले करौली में दंगा भड़का, फिर उसके

रोडवेज की बसों में अब महिलाओं का लगेगा आधा किराया

जयपुर। राज्य सरकार ने महिलाओं को रोडवेज की बसों में सफर करने पर रियायत का दायरा बढ़ाया है। अब महिलाओं/बालिकाओं को राज्य की सीमा में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की समस्त श्रेणी की बसों में यात्रा करने पर 50 प्रतिशत की रियायत दी जाएगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस संबंध में प्रस्ताव को स्वीकृति दी है।

प्रस्ताव के अनुसार, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की सभी श्रेणी की बसों में यात्रा करने पर महिलाओं/बालिकाओं का आधा किराया ही लगेगा। अभी महिलाओं/बालिकाओं को केवल साधारण श्रेणी की बसों में यात्रा करने पर 50 प्रतिशत की छूट दी जा रही थी।

प्रदेश में कोरोना से एक संक्रमित की मौत

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में गुरुवार को एक संक्रमित की कोरोना से मौत हो गई है। वहीं इस बीच राज्य में एक नया मरीज मिला है। प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में पांच संक्रमितों के रिकवर होने से एक्टिव केस घटकर 8 रह गए हैं।

प्रदेश में गुरुवार को उदयपुर में एक नया संक्रमित पाया गया है। इससे पहले राज्य में बुधवार को भी एक रोगी मिला था। इधर राज्य में आज 1665 कोविड जांच की गई है।

प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में उदयपुर में पांच संक्रमितों के ठीक होने से एक्टिव केस घटकर 8 रह गए हैं। इनमें छह मामले जयपुर में हैं। प्रदेश में गुरुवार को कोरोना से दोसा में एक संक्रमित की मौत हो गई है।

महिला बंदियों ने किया योगायास

जयपुर । आर्ट ऑफ लिविंग परिवार जयपुर द्वारा महिला जेल एवं जिला जेल जयपुर में 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग प्राणायाम का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत बंदियों को योग, प्राणायाम, एवं ध्यान कराया गया जिसे बंदियों द्वारा उक्त कार्यक्रम में शामिल हो कर जीवन में ध्यान साधना का संकल्प लिया गया।

■ **पर्दे के पीछे रह कर आग लगाने का काम कांग्रेस का, संघ और भाजपा का काम तो आग बुझाने का है : राजे**

बाद भोलवाड़ा और जोधपुर में दंगे हुए। इस सरकार की तुष्टीकरण नीति के चलते उदयपुर में निर्दोष कैन्द्थालाल टेलर का सिर काट दिया गया। शेखावत ने कहा कि गहलोत सरकार में तुष्टीकरण की हालत यह है कि दंगों की जांच और आरोपियों को पकड़ने में भी धार्मिक आधार पर भेदभाव किया जाता है। यही कारण है कि इनकी कमजोर पैरवी के चलते जयपुर बम ब्लास्ट के आरोपी हाईकोर्ट से छूट गए। हद तो यह है कि

अपनी तुष्टीकरण नीति को देखने के बजाय मुख्यमंत्री दूसरों पर आरोप लगाते हैं। शेखावत ने कहा कि इससे जनता में आक्रोश है और आगामी चुनाव में यह कांग्रेस की हार के रूप में सामने आएगा। शेखावत ने कहा कि चुनाव का समय आते ही मुख्यमंत्री गोभक्त हो जाते हैं। गोदान करने का राग अलापते हैं, लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि राजस्थान में लाखों गायें लंपी से मर गई थीं। उनके उपचार में उनकी सरकार पूरी तरह विफल साबित हुई। अब सरकार ने मात्र 76 हजार मौतें लंपी से मानी है जबकि इस महामारी में लाखों गायें मारी थीं। गोपालकों को मुआवजा देने का ढोल तो पीटा जा रहा है, लेकिन वह अभी तक पूरा नहीं दिया गया। शेखावत ने कहा कि राज्य में अभी तक 42 हजार दुधारू गायों का ही मुआवजा दिया है, जबकि

पशुपालकों को राहत शिविरों में बुलाकर परेशान किया जा रहा है।

पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा है कि मुख्यमंत्री आरएसएस और भाजपा को कोसने से बाज आए। प्रदेश में दंगे आरएसएस और भाजपा नहीं अशोक गहलोत की तुष्टिकरण नीति करवाती है, जितनी भी साम्प्रदायिक घटनायें हुई हैं, उनके पीछे कांग्रेस की वोटों की राजनीति है। पर्दे के पीछे रह कर आग लगाने का काम कांग्रेस का है, संघ और भाजपा तो कांग्रेस की लगाई हुई आग को बुझाती है। आये दिन संघ के खिलाफ एक ही राग अलापने वाले गहलोत शायद भूल गये कि देश की आजादी के समय जब पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर सीमा लांघने की कोशिश की, तो सैनिकों के साथ संघ के स्वयंसेवकों ने मातृभूमि की रक्षा करते हुए प्राण दिए थे।

हाईकोर्ट ने गजेन्द्र सिंह शेखावत को नोटिस भेजा

अदालत ने पूछा कि ए.सी.बी. को उनके वॉइस सैम्पल लेने की अनुमति क्यों ना दे दी जाए

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने विधायकों की खरीद-फरोख्त से जुड़े मामले में वायरल हुई ऑडियो क्लिप को लेकर केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह को नोटिस जारी कर पूछा है कि एंटी करप्शन ब्यूरो (ए.सी.बी.) को उनकी वॉइस सैंपल लेने की अनुमति क्यों ना दे दी जाए। जस्टिस सीके सोनगारा की अवकाशकालीन एकलपीठ ने यह आदेश राज्य सरकार की याचिका पर दिए।

याचिका में अतिरिक्त महाधिवक्ता घनश्याम सिंह राठौड़ ने अदालत को बताया कि निचली अदालत ने गलत तरीके से ए.सी.बी. के प्रार्थना पत्र को खारिज किया है। निचली अदालत ने जिस आधार पर वॉइस सैंपल लेने के संबंध में ए.सी.बी. का प्रार्थना पत्र को खारिज किया है, वह प्रावधान

■ **हाईकोर्ट ने यह नोटिस विधायकों की खरीद फरोख्त मामले में एक वायरल ऑडियो क्लिप के संबंध में दिया है। आरोप है कि, उस ऑडियो क्लिप में शेखावत की आवाज है।**

ब्लड सैंपल और हैडराइटिंग के सैंपल लेने के मामले में लागू होता है। जबकि यह मामला वॉइस सैंपल लेने का है। राज्य एजेंसी गिरफ्तार किए बिना भी वॉइस सैंपल ले सकती है। सुप्रीम कोर्ट

भी पूर्व में अन्य मामले में तय कर चुका है कि इस संबंध में संसद की ओर से स्पष्ट कानून बनाने तक मजिस्ट्रेट वॉइस सैंपल लेने की अनुमति दे सकते हैं। ऐसे में निचली अदालतों के आदेश को रद्द करते हुए ए.सी.बी.को गजेन्द्र सिंह की वॉइस सैंपल लेने की अनुमति दी जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने गजेन्द्र सिंह को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है।

गौरतलब है कि जुलाई, 2020 में तीन ऑडियो क्लिप वायरल हुई थीं, जिसमें विधायकों की खरीद फरोख्त को लेकर बातचीत की जा रही थी। आरोप है कि इस ऑडियो क्लिप में केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह और संजय जैन की आवाज है। ऑडियो क्लिप के आधार पर पहले एसओजी ने मामला दर्ज किया

था। वहीं बाद में एसओजी की ओर से क्षेत्राधिकार के आधार पर एफ.आर. पेश की गई थी। दूसरी ओर इसी मामले में एसीबी ने भी संजय जैन, विधायक भंवरलाल शर्मा और गजेन्द्र सिंह के खिलाफ मामला दर्ज किया था तथा संजय जैन को गिरफ्तार भी किया था। इसके बाद निचली अदालत ने एसीबी को संजय जैन का वॉइस सैंपल लेने की अनुमति दी थी, लेकिन संजय ने सैंपल देने से मना कर दिया था। वहीं निचली अदालत ने गजेन्द्र सिंह का सैंपल लेने के लिए ए.सी.बी. की ओर से पेश प्रार्थना पत्र को खारिज कर दिया था। इसके खिलाफ पेश रिवीजन को ए.डी.जे. कोर्ट ने खारिज कर दिया था। राज्य सरकार की ओर से इस आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई है।

मोदी की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाए कार्यकर्ता : अरूण चतुर्वेदी

जयपुर। भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं केबिनेट मंत्री रहे डॉ.अरूण चतुर्वेदी ने सिविल लाइन विधान सभा क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की टिफिन बैठक को संबोधित करते हुए पार्टी कार्यकर्ताओं का आह्वान किया है की वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में लिए गए निर्णयों, योजनाओं की जानकारी से हर व्यक्ति को अवगत कराए।

डॉ.चतुर्वेदी ने कहा कि नरेंद्र मोदी के 9 वर्ष के कार्यकाल में देश ने हर क्षेत्र में प्रगति कर भारत का नाम दुनिया में रोशन किया है इसीलिए अब हमारा देश विश्व शक्ति के रूप में सामने आया है। मोदी के शासन में हर वर्ग के उत्थान का काम किया गया है। इस अवसर पर जयपुर सांसद रामचरण बोहरा ने केंद्र सरकार के कार्यों की चर्चा करते हुए 9 साल बनाम 66 साल की तुलना की। उन्होंने जयपुर रेल्वे स्टेशन के विकास की चर्चा करते हुए कहा कि मोदी सरकार ने जयपुर जंक्शन के लिए 727 करोड़, गांधीनगर स्टेशन के लिए 217 करोड़ और खातीपुरा स्टेशन के लिए 400 करोड़ रुपए का बजट पास कर जयपुर को पर्यटन स्थल के रूप में मान दिया है। बैठक में सिविल लाइन विधान सभा क्षेत्र के कार्यताओं ने अपने-अपने



भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं केबिनेट मंत्री रहे डॉ.अरूण चतुर्वेदी ने गुरुवार को सिविल लाइन विधानसभा क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की टिफिन बैठक में भाग लिया।

घर से लाए भोजन का आनंद लेकर एक दूसरे की मंजुहार की।

बैठक में प्रदेश कार्य समिति सदस्य रणजीत सिंह, शहर उपाध्यक्ष रवि शर्मा,

शहर मंत्री रेखा राठौड़, पूर्व कोषाध्यक्ष सुनील भार्गव, सिविल लाईंस विधानसभा के सभी मंडल अध्यक्ष राजकुमार शर्मा, निर्मल राजपुरोहित,

दिनेश यादव, राकेश गुर्जर सहित मोचों के अध्यक्ष, समस्त पार्षद, मंडल पदाधिकारी एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता और पदाधिकारी मौजूद थे।

राज्यपाल कलराज मिश्र को बीमा लोकपाल रिपोर्ट सौंपी



राज्यपाल कलराज मिश्र को प्रदेश के बीमा लोकपाल राजीव दत्त शर्मा ने गुरुवार को राजभवन में बीमा लोकपाल की वार्षिक रिपोर्ट-2022-23 की प्रति सौंपी। इस रिपोर्ट के अनुसार वित्तीय वर्ष 2022-23 में राजस्थान लोकपाल कार्यालय में ११11 शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें से 679 शिकायत जीवन बीमा संबंधित, 2९5 सामान्य बीमा से और 9३7 शिकायत स्वास्थ्य खंड बीमा से संबंधित थीं। इन सभी शिकायतों का निपटारा इसी वित्तीय वर्ष में कर दिया गया है। बीमा लोकपाल ने राज्यपाल को अवगत कराया कि वित्तीय वर्ष 2022-23 में प्राप्त शिकायतों की संख्या में लगभग 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस अवसर पर सचिव राजेश जलोडिया, उप सचिव राजेश कुमार पारीक व बीमा लोकपाल एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे।

‘स्वीकृत हुई पूरी लोन राशि नहीं देना फाइनेंस कंपनी का सेवादोष’

जयपुर, (का.सं.)। जयपुर मेट्रो की

स्थाई लोक अदालत ने कहा है कि उपभोक्ता का लोन स्वीकृत करने के बाद उसे स्वीकृत हुए लोन की पूरी राशि नहीं देना फाइनेंस कंपनी का सेवादोष है। ऐसे में फाइनेंस कंपनी से उसने जितनी लोन राशि ली है वह उतनी ही राशि चुकाने के लिए जिम्मेदार है, फिर चाहे फाइनेंस कंपनी ने उसे ज्यादा राशि का लोन ही मंजूर किया हो। वहीं अदालत ने परिवारी को कहा है कि वह लोन की बकाया राशि 17,520 रुपए विपक्षी फाइनेंस कंपनी को जमा कराए। स्थाई लोक अदालत के अध्यक्ष हरविन्दर सिंह व सदस्य शंभू दयाल शर्मा ने यह आदेश महेश सेनी के

परिवाद पर दिए।

परिवाद में कहा गया कि आदित्य बिरला फाइनेंस कंपनी ने 28 फरवरी 2019 को उसका 2.40 लाख रुपए का लोन मंजूर किया था। परिवारी की स्वीकृति मिलने पर कंपनी ने उसके बैंक खाते में एनईएफटी के जरिए 1,09,520 रुपए भेज दिए, लेकिन स्वीकृत लोन की बकाया राशि 1,30,480 रुपए उसे नहीं दी। परिवाद में कहा गया कि फाइनेंस कंपनी उससे मासिक किस्त लोन राशि 2.40 लाख रुपए पर ही ले रही है। जबकि मासिक किस्त एक लाख नौ हजार 520 रुपए पर ही लेनी चाहिए थी। इस पर उसने लोन अकाउंट बंद करने के लिए कहा

तो कंपनी ने एक साल के लॉक इन पीरियड का हवाला देकर मना कर दिया। इसे स्थाई लोक अदालत में चुनौती देते हुए कहा कि उसे स्वीकृत लोन राशि की बजाय कम राशि दी गई। ऐसे में मासिक किस्त स्वीकृत लोन के आधार पर लेना गलत है। इससे परिवारी को मानसिक संताप हो रहा है। इस पर अदालत ने कहा कि परिवारी लिए लोन के पेटे 92 हजार रुपए दे चुका है, इसलिए वह बकाया 17,520 रुपए ही फाइनेंस कंपनी में जमा कराए।

‘मुफ्त बिजली 100 यूनिट हुई तो घटी सरकारी सब्सिडी’

जयपुर । राजस्थान की गहलोत सरकार इन दिनों प्रदेश के प्रत्येक परिवार को 50 यूनिट के बजाय 100 मुफ्त बिजली मुफ्त देने के नाम पर खुद की वाहवाही करते नहीं थक रही है। लेकिन मजेदार बात यह है कि राजधानी जयपुर में जहां सरकार बैठती है, वहीं पर बिजली बिलों में दी जाने वाली सब्सिडी में गफलत सामने आ रही है।

जयपुर निवासी पैथोलॉजिस्ट डॉ. रोहित जैन ने सोशल मीडिया पर जयपुर डिस्कॉम द्वारा जारी अपने अप्रैल व मई माह के बिजली बिल को शेर करते हुए सब्सिडी देने में गफलत की पोल खोली है। उनका कहना है कि अप्रैल माह में जब सरकार 50 यूनिट मुफ्त बिजली देती थी, तब 750 रुपये सब्सिडी की राशि बिजली के बिल में से कम हुई थी, लेकिन जब मई माह में 100 यूनिट मुफ्त बिजली का बिल आया तो उसमें यह राशि घटकर 562.50 रुपये ही कर दी गई। इससे साफ जाहिर होता है कि राजस्थान सरकार आखिर किस तरह से आमजन को मूर्ख बनाने का काम कर रही है।

606 नवीन पदों का होगा सृजन

जयपुर । मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने नवसृजित 15 जिला में प्रशासनिक कार्य सम्पादन की सुविधा से कलेक्ट्रेट कार्यालयों हेतु 606 नवीन पदों के सृजन की मंजूरी दी है।

उन्होंने नवसृजित कार्यालयों को विभागीय भवन उपलब्ध होने तक क्रियाये के भवन में संचालित किये जाने की भी स्वीकृति प्रदान की है।

विवाहिता से गैंगरेप का मामला दर्ज

जयपुर । खोह-नागौरियान क्षेत्र में एक विवाहिता से गैंगरेप का मामला सामने आया है। पीड़िता ने खोह नागौरियान थाने में चार आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

भाविनी भार्गव को ऑस्ट्रेलिया में मिली 70 लाख की स्कॉलरशिप

जयपुर (कासं)। जयपुर की बहुमुखी युवा प्रतिभा भाविनी भार्गव ने अपनी उपलब्धियों से न सिर्फ राजस्थान का, बल्कि पूरे देश को गौरवान्वित किया है। उन्हें ऑस्ट्रेलिया की विश्व प्रसिद्ध डीकिन यूनिवर्सिटी की ओर से 70 लाख रुपए की डॉकिन राजस्थान रॉयल्स 100 प्रतिशत वाइस चांसलर्स स्कॉलरशिप प्रदान की गई है। इसके जरिए वर्तमान में वे वहां बैल्लर इन स्पोर्ट्स मैनेजमेंट का कोर्स कर रही हैं। उल्लेखनीय है कि कई चरणों की परख के बाद इस स्कॉलरशिप के लिए दुनियाभर के कुछ युवाओं का चयन किया जाता है।

इसमें इस सेशन में भारत से जयपुर की भाविनी भार्गव सहित सिर्फ दो स्टूडेंट्स का चयन किया गया है। राजस्थान के एनजीओ वसुधा जन विकास संस्थान के साथ इंटरनशिप के तहत गांवों की लड़कियों को खेलों के बारे में जागरूक करने तथा स्पोर्ट्स व एकेडमिक अचीवमेंट्स के आधार पर इस

स्कॉलरशिप के लिए भाविनी का चयन किया गया। वे जयपुर के प्रसिद्ध डर्मेटोलॉजिस्ट डॉ. पुनीत भार्गव व डॉ. सीमा भार्गव की बेटी हैं।

ऑस्ट्रेलिया में भारतीय स्टूडेंट्स को अपने काम से मोटिवेट करने के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, भाविनी भार्गव को भारत और ऑस्ट्रेलिया में एजुकेशन कोलोब्रेशन का मोटिवेशन फेस चुन चुके हैं।

भाविनी इस सम्मान को एक बड़ी जिम्मेदारी मानती है और उम्मीद करती है कि स्टडी के लिए विदेश जाने वाले भारतीय स्टूडेंट्स दुनियाभर में अपनी उपलब्धियों से देश का नाम रोशन करें। भाविनी ने ईंग्लिश पोएम बुक अनहियर्ड लिखी है, जो आज अमेजन की बेस्ट सेलिंग बुक है और इससे भाविनी अमेजन की बेस्ट सेलिंग बुक राइटर बन चुकी है। इस बुक में इस युवा लेखिका ने अपनी रचनाओं के जरिए बताया है कि जीवन में उतार-चढ़ावों से कैसे पार पाया जा सकता है।

दो बाइकों की भिड़ंत में युवक की मौत, तीन गंभीर रूप से घायल

युवक की मौत से गुस्साए परिजनों ने अस्पताल में शव लेने से इनकार कर दिया

करोली (नि.स.)। करोली-सरमथुरा नेशनल हाईवे 23 पर दीपपुरा गांव के पास दो मोटरसाइकिलों की आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। इस दौरान एक युवक की मृत्यु हो गई जबकि तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए।

दो घायलों को गंभीर हालत में करोली अस्पताल से उपचार के लिए जयपुर रैफर किया गया है। हादसे में युवक की मौत से गुस्साए परिजनों ने अस्पताल में शव लेने से इनकार कर दिया। सूचना पर पहुंचे करोली विधायक लाखन सिंह मीणा और नगर परिषद के सभापति प्रतिनिधि अमीनुद्दीन खान ने परिजनों से समझाईश की। विधायक ने मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना से आर्थिक सहायता देने का आश्वासन दिया इसके बाद परिजन शव लेने पर सहमत हुए पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिवार जनों को सौंप दिया। करोली सामान्य चिकित्सालय



अस्पताल में युवक की मौत के बाद परिजनों से विधायक लाखन सिंह मीणा ने समझाईश की।

पुलिस चौकी प्रभारी एएसआई मंहेश शर्मा ने बताया कि करोली की मुस्लिम

बस्ती ढोलीखार मोहल्ला स्थित जामा मस्जिद के पास निवासी फरदीन पुत्र

यकीनुउद्दीन मोटरसाइकिल से अन्य युवकों के साथ बुधवार की देर रात

करोली लौट रहे थे इस दौरान दूसरी मोटरसाइकिल से टक्कर हो गई मोटरसाइकिल सवार चार युवक गंभीर रूप से घायल हो गए।

घायलों को इलाज के लिए करोली अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद फरदीन को मृत घोषित कर दिया जबकि तीन युवक घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए ट्रामा वार्ड में भर्ती करते हुए प्राथमिक उपचार देकर गंभीर हालत में जयपुर रैफर कर दिया। गुरुवार प्रात मृतक के परिजनों ने अस्पताल में हंगामा कर दिया और युवक का शव लेने से इनकार कर दिया। बाद में पहुंचे करोली विधायक लाखन सिंह मीणा ने समझाईस कर मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना से आर्थिक सहायता का आश्वासन दिया इसके बाद परिवार जन शव लेने पर सहमत हुए पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है और मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

“उत्कर्ष क्लासेस” समर धमाका ऑफर का आज आखिरी दिन

जोधपुर, (कासं)। उत्कर्ष क्लासेस द्वारा देश भर के विद्यार्थियों के लिए उत्कर्ष एप के सभी ऑनलाइन कोर्सेस पर समर धमाका ऑफर दिए जाने की घोषणा की गई है जिसका आज आखिरी दिन है। इस ऑफर के तहत विद्यार्थियों को उत्कर्ष एप के 650 से अधिक ऑनलाइन कोर्सेस पर 90 प्रतिशत तक की छूट उपलब्ध करवाई जा रही है। उत्कर्ष क्लासेस के संस्थापक एवं निदेशक डॉ. निर्मल गहलोत ने बताया कि विभिन्न विद्यार्थी वर्ग के लिए संस्थान द्वारा रखे गए समर धमाका ऑफर के अंतर्गत उत्कर्ष एप में उपलब्ध सभी केन्द्रीय व राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं सहित विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं

एवं स्कूली टयूशन के ऑनलाइन कोर्सेस पर 9० प्रतिशत तक का भारी डिस्काउंट दिया जा रहा है। उत्कर्ष एप में आईएएस्, आरएएस्, यूपीपीएससी, एमपीपीएससी, एएसएससी, बैंक, रेलवे, केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (सीटेट) इत्यादि के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा एवं बिहार के विभिन्न राज्य स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं सहित नीट-जेईई, क्लेट, सीयूईटी, डिफेंस, नर्सिंग, कृषि, न्यायिक सेवा परीक्षा, इंजीनियरिंग के ऑनलाइन कोर्सेस तथा सीबीएसई एवं विभिन्न राज्य बोर्ड के तहत कक्षा 6 से 12 तक (हिंदी व अंग्रेजी माध्यम) के ऑनलाइन टयूशन कोर्सेस उपलब्ध हैं। इन सभी श्रेणियों पर उपलब्ध

समर धमाका ऑफर का आज आखिरी दिन है।

डॉ. गहलोत ने बताया कि समर धमाका ऑफर के अंतर्गत रखे गए विशेष ऑफर को विद्यार्थियों को बेहद मांग पर बढ़ा दिया गया है। इसके तहत उत्कर्ष एप में उपलब्ध कोई भी लाइव फ्रॉम क्लासरूम ऑनलाइन कोर्स प्राप्त करने पर प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण एनसीईआरटी फाउंडेशन का ऑनलाइन कोर्स विद्यार्थियों को 23 जून तक नि:शुल्क दिया जा रहा है। इसके अलावा उत्कर्ष एप के ऑनलाइन कोर्सेस सीएससी, ई-मित्र अथवा आरकेसीएल के माध्यम से खरीदने पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त डिस्काउंट दिया जाता है।

युवक ने सुसाइड किया

बीकानेर, (निर्सं)। नयाशहर थाना क्षेत्र के पास रहने वाले एक युवक ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। आरोप है कि उसी का एक पड़ोसी खुद को लॉरेंस का गुर्गा बताकर उसे धमका रहा था और सत्तर हजार रुपए के साथ एक आईफोन भी हड़प लिया था। युवक के खिलाफ पुलिस को परिवार दिया गया है। इससे पहले भी एक एफआईआर इसी थाने में दर्ज करवाई गई थी लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई।

बीकानेर के कल्ला पेट्रोल पंप के पास रहने वाले सुख सिंह ने आरोप लगाया है कि उसके बेटे अशोक सिंह को संजय धारणियां नामक पड़ोसी हर रोज धमका रहा था। खुद को लॉरेंस हुए का सदस्य बताकर पहले पचास हजार रुपए ले लिए। बाद में 87 हजार रुपए और ले लिए। इतना ही नहीं अशोक का आईफोन भी ले लिया जो अब तक संजय

■ एक पड़ोसी खुद को लॉरेंस का गुर्गा बताकर उसे धमका रहा था

धारणियां के पास ही था। बार-बार धमकाने पर अशोक सिंह ने एक एफआईआर अप्रैल महीने में नयाशहर थाने में दर्ज करवाई थी। इस एफआईआर पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। अब अशोक सिंह ने उससे पेशान होकर अपने कमरे में फांसी लगाकर सुसाइड कर ली। घटना की जानकारी मिलने पर गुरुवार सुबह नयाशहर थाना प्रभारी वैद्यकाश मौके पर पहुंचे। युवक का शव पीबीएम अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। पुलिस इस बारे में स्थिति स्पष्ट नहीं कर पा रही है कि पूर्व में एफआईआर दर्ज होने के बाद भी संजय धारणियां के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं हो पाई?

सर्प के काटने से युवक की मौत

सादुलपुर, (निर्सं)। राजगढ़ थाने के गांव चैलानाबास में अपने खेत में फसल से खरपतवाा हटते समय सर्प के काटने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। जिसका राजगढ़ थाने में प्रकरण दर्ज किया गया है। थानाधिकारी सुभाष चन्द्र ने बताया कि राजगढ़ थाने में अन्तर सिंह पुत्र महेन्द्र सिंह नायक उम्र 30 साल निवासी चैलानाबास तहसील राजगढ़ जिला चूरू ने इस आरोप का मामला दर्ज करवाया है कि 21 जून को खेत में खरपतवार करने समय सांय करीबन 6 बजे उसके पिता महेन्द्र पुत्र नत्थुराम नायक निवासी चैलानाबास को सर्प ने काट लिया। जब उन्हें पता चला तो वे अपने पिता को गाड़ी में बैठाकर घर पर ले आये तथा उस समय तबीयत ठीक लग रही थी और उसने सोचा की सुबह हॉस्पिटल ले जायेंगे, लेकिन तब तक तबीयत ज्यादा बिगड़ गई।

पेट्रोल पंप पर लूट

अनुपगढ़, (निर्सं)। मंडी की कुपली रोड पर स्थित रीको एरिया के पास एक पेट्रोल पंप पर लूट का मामला सामने आया है। देर रात करीब 1०.3० और 11 बजे के बीच सात-आठ व्यक्तियों ने पेट्रोल पंप के दो कर्मचारियों के साथ मारपीट करते हुए पेट्रोल पंप पर तोड़फोड़ की और 20 हजार और एक मोबाइल लूट कर मौके से फरार हो गए। कर्मचारियों के द्वारा इसकी सूचना पेट्रोल पंप के मालिक कुलदीप भागव को दी। सूचना मिलने पर कुलदीप भागव मौके पहुंचा और इसकी सूचना घड़साना पुलिस में दी। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौका मुआयना किया और आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए क्षेत्र में नाकाबंदी करवा दी मगर अभी तक कोई भी आरोपी गिरफ्तार नहीं हो पाया है। इस घटना में पेट्रोल पंप के एक कर्मचारी को चोट भी लगी है।

पेट्रोल पंप के कर्मचारी रामकरण

ने बताया कि वह अपने साथी गणेश के साथ बुधवार रात्रि पेट्रोल पंप पर कार्य कर रहा था। रात 1० बजे दोनों ने पेट्रोल पंप को बंद किया और सोने के लिए पेट्रोल पंप पर बने कैबिन में चले गए। पेट्रोल पंप के कैबिन मुख्य गेट जो कि कांच का था और वह गेट लॉक कर दिया। रामकरण ने बताया कि लगभग 1०.3०-11 बजे के बीच में चार बाइक पर लगभग 7-8 व्यक्ति सवार होकर आए। हमलावर कांच का गेट तोड़ते ही अंदर घुस आए और उनके साथ मारपीट शुरू कर दी। रामकरण ने बताया कि उसके व उसके दोस्त गणेश के द्वारा जो शोर मचाया गया तो शोर सुनकर मौके पर काफी लोग आ गए मगर हमलावर पेट्रोल पंप से लगभग 2० हजार और एक मोबाइल लूट कर मौके से फरार हो गए। पेट्रोल पंप के मालिक भागव ने बताया कि घड़साना पुलिस थाने में अज्ञात हमलावरों के खिलाफ रिपोर्ट दे दी गई है।

युवक की मौत

सादुलपुर, (निर्सं)। गोठ्या की रोही में बने होटल पर मजदूरी करने वाले एक नेपाल निवासी एक व्यक्ति की रेलवे लाइन पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने के कारण मौत हो गई, जिसकी गुरुवार को राजगढ़ थाने में मर्ग दर्ज करवाई गई है। थानाधिकारी सुभाष चन्द्र ने बताया कि अमर बहादुर पुत्र बल बहादुर घर्तीमगर उम्र 63 साल निवासी रून्टी गढी गाँव पालिका रोल्पा वार्ड नम्बर 2 नेपाल ने इस आरोप का मामला दर्ज करवाया है कि उसके छोटे भाई का लड़का शंकर पुद्म जात घर्तीमगर उम्र 23 साल निवासी रून्टी गढी गाँव पालिका रोल्पा वार्ड नम्बर 2 नेपाल जो कि एनएच 52 पर होटल मस्ती माल्टा चिकन कॉर्नर पर सदीप उर्फ सोनू पुत्र धूप सिंह जाट निवासी गौठ्या छोटी के होटल पर मजदूरी का काम करता था। आज 22 जून को होटल के पीछे बनी रेलवे लाईनों को पार कर शौचालय जाने हेतु लाईन क्रॉस कर रहा था।

फर्जी पट्टा प्रकरण में कोटड़ी के पूर्व सरपंच गिरफ्तार

■ डिडवानिया की गिरफ्तारी से भाजपाहॉयों में रोष

कोटड़ी में 18 मार्च 2०16 को आवेदन किया। परन्तु ग्राम पंचायत कोटड़ी ने कोई पट्टा जारी नहीं किया। इसके बाद गोपाल ने पुनः उक्त भूखण्ड पर पट्टा जारी करने के लिए 27 अप्रैल 2023 को ग्राम पंचायत कोटड़ी में आवेदन किया। आवेदन के बाद भी ग्राम पंचायत कोटड़ी के सरपंच जमनालाल डिडवानिया व कान्ना देवी एवं सचिव बाबु लाल सुवालका ने आपस में आपसी मिलाभगत कर सरपंच, सचिव द्वारा पट्टा जारी नहीं किया जा रहा है।

उल्टा परिवारी को धमकाया जा रहा है। 21 मई 2०23 को दिन के करीब 12 बजे आरोपित, परिवारी गोपाल के पुत्तैनी भूखण्ड पर कब्जा करने की नियत से हमसलाह होकर आये, गिनाले हाथों में धारदार हथियार कुल्हाडियां और छुरे थे। यह लोग परिवारी के पुत्तैनी भूखण्ड पर सफाई करने पेड़-पौधे काटने लग गये। परिवारी को इसकी जानकारी होने पर उसका बेटा किशन मौके पर गया तो उसके साथ अनिल व उसके साथ आये 1०-12 व्यक्तियों ने गाली गलौच कर जातिगत

अपमानित किया। परिवारी गोपाल ने उन्हें रोकने का प्रयास किया तो लात-घूसों से मारपीट की। जान से खत्म करने की धमकी दी। इसके बाद परिवारी ने ग्राम पंचायत में जाकर जानकारी ली तो सरपंच पति जमना लाल डिडवानिया व सचिव ने जातिगत अपमानित करते हुये धमकी दी कि यहां से भाग जा। तरे भूखण्ड का पट्टा अनिल के बना दिया है, अब तेरे से हो जो कर लेना। इस प्रकार सरपंच, सचिव व अनिल नायक ने आपसी मिलाभगत कर यह जानते हुए कि उक्त भूखण्ड परिवारी का पुत्तैनी है, इसके बावजूद भी फर्जी तरीके से अनिल नायक का कोई कब्जा आधिपत्य नहीं होते हुए भी फर्जी पट्टा जारी कर दिया। गोपाल का आरोप था कि सरपंच, सचिव व अनिल नायक उसे लागातार धमकी दे रहे है कि अगर कोई शिकायत की तो तुझे जान से खत्व कर देंगे और तेरे हाथ पैर काट देंगे। पूर्व में अनिल नायक, सरपंच जमना लाल अपने साथ 1०-12 व्यक्तियों को साथ में लेकर हाथों में धारदार हथियार कुल्हाड़ा, तलवार लेकर अनाधिकृत रूप से गोपाल के घर में घुसकर गाली गलौच कर मारपीट करने लगे और जातिगत अपमानित कर जान से मारने की धमकी दी।

विश्व उष्ट्र दिवस के उपलक्ष्य में कैमल सफारी का आयोजन

मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट एवं सीमा सुरक्षा बल के कैमल कंटिंजेंट के तत्वावधान में कार्यक्रम

जोधपुर, (कासं)। विश्व उष्ट्र दिवस के उपलक्ष्य में मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट एवं सीमा सुरक्षा बल के कैमल कंटिंजेंट के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार सुबह आठ बजे कैमल सफारी का आयोजन किया गया। यह सफारी सी यू बल के द्वार क्रमांक 1 से शुरू होकर, राव जोधा मार्ग होते हुए मेहरानगढ़ दुर्ग तक पहुंची। इसमें करीब 45 ऊंटों ने भाग लिया। आईजी पुनीत रस्तोगी, एस टी सी सीमा सुरक्षा बल, जोधपुर के नेतृत्व में कैमल पेरंड का आयोजन किया गया। समारोह में डीआईजी योगेंद्र सिंह राठौड़, धीरेन्द्र सिंह राठौड़, 2 आई सी, तथा सीसु बल के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। इस पेरंड समूह के मेहरानगढ़ पहुंचने पर मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट,



विश्व उष्ट्र दिवस के उपलक्ष्य में कैमल सफारी का आयोजन किया।

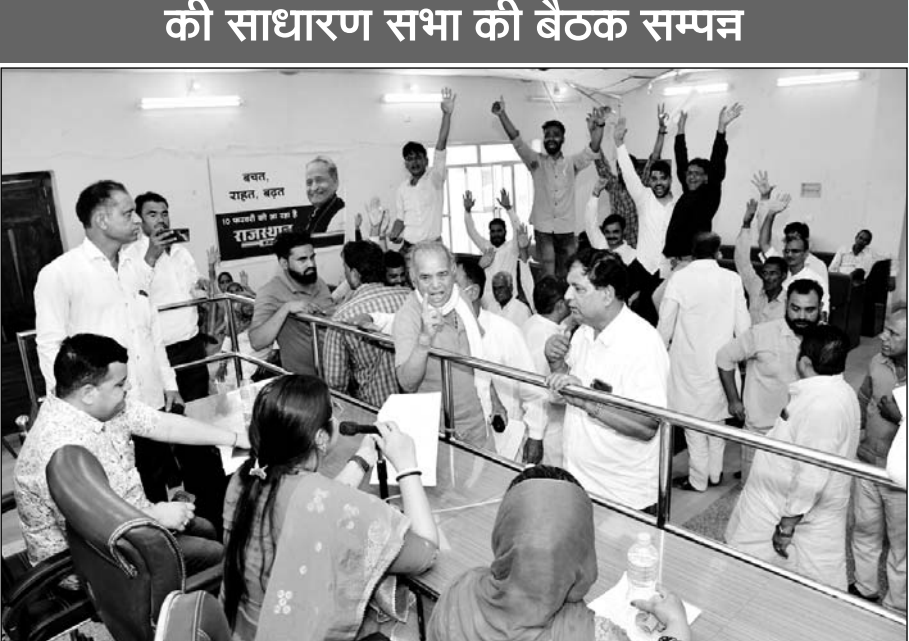
कैमल करिमा, टैको, इंटरैक्टिव जोधपुर, कैमल कंजर्वेशन ट्रस्ट, श्री महावीर युवा संघ के सदस्यों द्वारा स्वागत किया

गया। उल्लेखनीय है कि हिज हाइनेस महाराजा हनवंत सिंहजी का चुनाव चिन्ह ऊंट था तथा सम्पूर्ण मारवाड में

राजस्थान के राष्ट्र पशु उष्ट्र चिन्ह के चर्चे थे। रंगिस्तान के जहाज कहलाये जाने

नगरपरिषद् की बैठक में भाजपा व कांग्रेस पार्षद उलझे

सभापति की अध्यक्षता में चूरू नगरपरिषद् की साधारण सभा की बैठक सम्पन्न



बैठक में सभापति पायल सैनी के समक्ष भाजपा व कांग्रेस पार्षद आपस में उलझ पड़े।

चूरू, (कासं)। नगरपरिषद सभागार में सभापति पायल सैनी की अध्यक्षता में गुरुवार को साधारण सभा की बैठक आयोजित की गई। जिसमें कांग्रेस-भाजपा पार्षदों ने आपस में उलझ कर जोरदार हंगामा खड़ा कर दिया। बैठक में प्रथम एजेण्डा कुम्भाराम आर्य की मूर्ति व सुभाष चौक पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति लगाने के प्रस्ताव से ही विपक्ष के पार्षदों द्वारा हंगामा शुरू कर दिया गया। बैठक में भाजपा पार्षद कई बिंदुओं से असहमत

होने के कारण विरोध प्रकट करने लगे। इसी बीच कांग्रेसी पार्षदों व भाजपा पार्षदों ने हंगामा खड़ा कर दिया। जिससे बैठक में कई बार व्यवधान पैदा हुआ। आयुक्त जोधाराम बिश्नोई ने बताया कि बैठक में कुल 14 प्रस्ताव रखे। सदन ने बहुमत के साथ प्रस्ताव पारित कर दिये व प्रस्ताव संख्या 11 के बिन्दु संख्या छह पर अंकित प्रस्ताव नाला/नाली सफाई कार्य हेतु श्रमिक उपलब्ध करवाने के कार्य का अतिरिक्त प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति राशि

36.74 लाख रूपये के प्रस्ताव का कार्य पिछले बोर्ड का होने के कारण सदन में उपस्थित सदस्यों ने बहुमत से प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। सभापति पायल सैनी ने बताया कि बैठक में वर्तमान में चल रहे विकास कार्यों, विभिन्न वार्डों में नवीन विकास कार्यों, अम्बेडकर छात्रावास में टीनशैड निर्माण पर विचार, सफाई व्यवस्था व रोशनी व्यवस्था पर विचार-विमर्श सहित अन्य बिंदुओं पर विचार विमर्श किया गया।

ई-मित्र की दुकान से रुपए व सामान चोरी

हनुमानगढ़, (निर्सं)। टिब्बी थाना क्षेत्र के सिलवाला खुर्द गांव में चोरों ने ई-मित्र की दुकान से रुपए और अन्य सामान पर हाथ साफ कर लिया। टिब्बी थाने में इस मामले में दुकानदार ने चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। टिब्बी पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुट गई है।

जांच अधिकारी एएसआई शम्भूदयाल स्वामी ने बताया कि कुंदन

लाल (26) पुत्र प्रेम कुमार मेघवाल निवासी सिलवाला खुर्द ने थाने में रिपोर्ट दी कि मेरा गांव के ही वार्ड 4 की मुख्य सड़क पर ई-मित्र और ग्राहक सेवा केन्द्र एसबीआई के नाम से दुकान है। पीड़ित कुंदल लाल ने पुलिस को बताया कि वह शाम 6 बजे दुकान बंद कर घर चला गया था। 18 जून को सुबह उसके किराएदार ने फोन पर सुबह 6 बजे सूचना दी कि दुकान

का ताला खुला पड़ा है। उस समय परिवारी कुंदल लाल ने दुकान पर पहुंचकर देखा तो दुकान और गल्ले का ताला टूटा हुआ था। अन्य सामान मोबाइल एक्ससेरीज गायब थी। दुकान के गल्ले में रखे 41 हजार 3०0 रुपए भी चोरी हो गए। टिब्बी पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

भूंगरा गैस त्रासदी, मुआवजे की मांग

हनुमानगढ़, (निर्सं)। श्री ओम बन्ना टाइगर फोर्स और राष्ट्रीय मानवाधिकार और भ्रष्टाचार नियंत्रण ब्यूरो के सदस्यों ने भूंगरा गैस त्रासदी के पीड़ितों की 18 लाख रुपए की राशि का भुगतान करवाने की मांग की है। इस मामले में दोनों संगठनों के सदस्यों की ओर से गुरुवार को मुख्यमंत्री के नाम एसडीएम को ज्ञापन सौंपा गया।

श्री ओम बन्ना टाइगर फोर्स के रविन्द्र सिंह ने बताया कि जोधपुर जिले के भूंगरा गांव में 8 दिसम्बर 2022 को गैस कांड हुआ था। इसमें 35 लोगों की जान चली गई थी। पीड़ितों को मुआवजा राशि मिलनी शुरू हो गई, लेकिन एक परिवार की मृतक 2 मासूम बच्चियों के नाम से जारी 18 लाख रुपए की सरकारी मुआवजा राशि जनाधार से गलत खाता लिंक होने के कारण किसी दूसरे व्यक्ति के खाते में जमा हो गई। यह व्यक्ति हनुमानगढ़ जिले की टिब्बी तहसील के खाराखेड़ा गांव का निवासी है। उस व्यक्ति ने यह राशि निकलवाकर खर्च कर दी। इस राशि का भुगतान अभी तक पीड़ित परिवार को नहीं हुआ। अब मासूम मृतक बच्चियों की मां कैलाश कंवर सरकारी सहायता के लिए दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर है। पीड़ित परिवार के समर्थन में जोधपुर में श्री ओम बन्ना टाइगर फोर्स के सदस्यों की ओर से आंदोलन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकारी राशि की वसूली में समय लग जाएगा।

■ कैमल सफारी में करीब 45 ऊंटों ने भाग लिया

वाले ऊंट की संख्या दिन ब दिन कम होती जा रही है। इस सफारी के माध्यम से विश्व उष्ट्र दिवस तथा हिज हाइनेस महाराजा हनवंत सिंहजी के जन्म शताब्दी वर्ष समारोह के उपलक्ष्य में ऊंट संरक्षण का सन्देश लोगों तक पहुंचाया गया। इस समारोह में विभिन्न ऊंट पालनहार एवं संरक्षक, पशु पालन एवं पशु चिकित्सा से जुड़े विभिन्न कार्यकर्ता, तथा किडजी विद्यालय के बच्चे व अध्यापिकाएं भी सम्मिलित हुए।

दिग्गज अमेरिकी कंपनी माइक्रोन गुजरात में सेमीकंडक्टर प्लांट लगायेगी

प्र.मंत्री मोदी से मुलाकात के बाद घोषणा हुई कि, कंपनी भारत में अपने पहले प्लांट में 22,540 करोड़ रु. का निवेश करेगी

नई दिल्ली, 22 जून। अमेरिका की मेमोरी चिप बनानी वाली कंपनी माइक्रोन टेक्नोलॉजी, इंक ने घोषणा की है कि कंपनी भारत में अपना पहला प्लांट लगाने जा रही है।

कंपनी ने गुरुवार को कहा कि, वे गुजरात में एक नई सेमीकंडक्टर असेंबलिंग और टेस्ट प्लांट लगाएंगी, जिसमें कुल 2.75 बिलियन डॉलर (लगभग 22,540 करोड़ रुपये) का निवेश होगा। बता दें कि यह देश में कंपनी की पहली फैक्ट्री होगी। माइक्रोन ने कहा कि वे दो फेज में प्लांट लगाने के लिए 82.5 मिलियन डॉलर तक का निवेश करेंगी।

माइक्रोन ने कहा कि केंद्र सरकार और गुजरात राज्य की सहायता से, प्लांट में कुल 2.75 बिलियन डॉलर

■ यह निवेश केन्द्र सरकार की स्कीम के तहत तय हुआ है, इसमें माइक्रोन को केंद्र सरकार से टोटल प्रोजेक्ट कॉस्ट के लिए 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता और गुजरात राज्य से टोटल प्रोजेक्ट कॉस्ट का 20 प्रतिशत वित्तीय सहायता मिलेगी।

(लगभग 22,540 करोड़ रुपये) का निवेश होगा।

माइक्रोन के प्लांट को सरकार की मॉडिफाइड असेंबली, टेस्टिंग, मार्किंग और पैकेजिंग (एटीएमपी) स्कीम के तहत मंजूरी दी गई है। स्कीम के तहत, माइक्रोन को केंद्र सरकार से टोटल प्रोजेक्ट कॉस्ट के लिए 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता और गुजरात राज्य से टोटल प्रोजेक्ट कॉस्ट का 20 प्रतिशत प्रोत्साहन वित्तीय सहायता मिलेगी।

माइक्रोन ने कहा कि गुजरात में नए प्लांट का निर्माण 2023 में शुरू होने की उम्मीद है और प्रोजेक्ट का पहला फेज 2024 के अंत में शुरू हो जाएगा। प्रोजेक्ट का दूसरा फेज दशक के दूसरे भाग में शुरू होने की उम्मीद है। माइक्रोन ने कहा कि इससे अगले कई सालों में 5,000 नई डायरेक्ट नौकरियां और 15,000 कम्प्युनिटी नौकरियां मिलेंगी।

कंपनी ने कहा, माइक्रोन का नया प्लांट चिप और सेमिकंडक्टर दोनों

प्रोडक्ट्स के लिए असेंबलिंग और टेस्ट मैनुफैक्चरिंग की सुविधा होगी और घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से मांग को पूरा करेगी।

प्रधान मंत्री ने भारत में सेमीकंडक्टर मैनुफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए माइक्रोन टेक्नोलॉजी को आमंत्रित किया था और कहा था कि देश सेमीकंडक्टर सप्लाई चैन के विभिन्न हिस्सों में प्रतिस्पर्धी लाभ प्रदान कर सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका की अपनी आधिकारिक यात्रा के विभिन्न उद्योगपतियों और कंपनी की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) से मिल रहे हैं।

मोदी टेस्ला और टिवटर के सीईओ एलन मस्क समेत कई दूसरी कंपनी की सीईओ से भी मुलाकात की।

अमेरिका की जेट इंजन निर्माता जी.ई. एयरोस्पेस की भी भारत में एंट्री

नयी दिल्ली/वाशिंगटन, 22 जून। अमेरिकी कंपनी जीई एयरोस्पेस ने गुरुवार को बताया कि उसने विमान विनिर्माता हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ मिल कर भारतीय वायु सेना के लड़ाकू जेट विमानों के लिए इंजन बनाने के करार

■ जी.ई. एयरोस्पेस ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ सेना के लिए लड़ाकू जेट विमानों के लिए इंजन बनाने के करार पर हस्ताक्षर किये।

पर हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी ने कहा है कि, वह भारत में इंजन बनाने के लिए अमेरकी सरकार से रक्षा निर्यात संबंधी आवश्यक लाइसेंस प्राप्त करने में लगी है। यह करार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वर्तमान अमेरिका यात्रा की एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है।

पटना सम्मेलन में एक प्रमुख ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) पवार के भतीजे अजीत पर भी मनी लॉण्डरिंग के आरोप हैं तथा उनके पास कई बेनामी सम्पत्तियां भी हैं। प्रफुल्ल पटेल, नवब मलिक और अनिल देशमुख के खिलाफ भी ई.डी. की जांच चल रही है।

आम आदमी पार्टी के और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से दिल्ली की शराब नीति व मनी लॉण्डरिंग केस में ई.डी. ने पूछताछ की थी। इसी मामले में मनीष सिसोदिया जेल में है।

आप के ही एक अन्य मंत्री सत्येन्द्र जैन के खिलाफ तो ई.डी., सी.बी.आई. और आई.टी. तीनों की जांच चल रही है। हाल ही में उन्हें बीमारी के कारण जमानत मिली है।

तृणमूल के नेता और प. बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी और उनकी पत्नी के खिलाफ कोयला तस्करी के मामले में ई.डी. की जांच चल रही है।

तृणमूल के ही पार्था चटर्जी व अनुव्रत मंडल से क्रमशः टीचर्स भती घोटाले, भी तस्करी के मामले में ई.डी. ने पूछताछ की है।

तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रमुक भी निशाने पर है। हाल ही में पार्टी के बिजली एवं आबकारी मंत्री सेथिल बालाजी की ई.डी. ने मनी लॉण्डरिंग केस में

गिरफ्तार किया है। उन पर इनकम टैक्स की जांच भी चल रही है। बिहार के राष्ट्रीय जनता दल के मुखिया लालू यादव व उनका पूरा परिवार ई.डी. के निशाने पर है। लालू यादव, उनकी पत्नी व पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और दो पुत्रियां ई.डी. के रडार पर हैं। तेजस्वी यादव के

खिलाफ तो ई.डी. के साथ सी.बी.आई. की जांच भी चल रही है। समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव अवैध रेत खनन केस में सी.बी.आई. के निशाने पर हैं तथा सपा के ही आजम खान पर मनी लॉण्डरिंग केस में ई.डी. ने शिकंजा कस रखा है।

आर.एस.एस....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लोगों में शत्रुता पैदा करने के लिये विभिन्न मुद्दों का उपयोग कर रहे हैं। हम यह भूल रहे हैं कि हम एक देश हैं। मुस्लिम सदियों से भारत में सुरक्षित रूप से रहते आये हैं। भारतीय लोग देखने में भिन्न हैं, अलग-अलग धार्मिक पंथों का अनुसरण करते हैं, लेकिन उन सबकी मातृभूमि तो एक ही है।"

जहाँ तक भाजपा का प्रश्न है, वह चार माह की एक सम्पर्क योजना पर बड़ी तत्परता के साथ कर रही है। इस योजना का उद्देश्य पसमन्दा मुस्लिमों तक अपनी पहुँच बनाना है जो मुस्लिम समुदाय में बहुसंख्यक स्थिति में हैं। भाजपा की अल्पसंख्यक शाखा उन मुस्लिमों को "मोदी मित्र प्रमाण पत्र" वितरित करने में लगी हुई है, जो विकास की योजनाओं को लाने के लिये

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई "पहलों और दृष्टि" के प्रशंसक हैं। इस वर्ष के अन्त में, दिल्ली में "मोदी – मित्रों" का एक विशाल सम्मेलन आयोजित किये जाने की योजना है। अपेक्षा की जा रही है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे।

भाजपा की पसमन्दा योजना ने नगर पंचायत के चेयरमैन पद के चुनावों में बड़े उत्साहजनक परिणाम दिये थे। इन चुनावों में, भाजपा ने कुल 199 उम्मीदवार खड़े किये थे, जिनमें से 32 मुस्लिम थे तथा इनमें उम्मीदवार चुनाव में विजयी रहे थे।

उत्तर प्रदेश के स्थानीय निकायों के चुनाव में भाजपा द्वारा खड़े किये गये मुस्लिम प्रत्याशियों में से 90 प्रतिशत प्रत्याशी पसमन्दा मुस्लिम थे।

कोविड का एक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) गृह एवं क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण (एमएचएडीए) के उपाध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। ईडी ने

इस सिलसिले में बुधवार को महाराष्ट्र में कई जगहों पर छापेमारी की थी।

ईडी अधिकारियों ने राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे तथा उनके पुत्र आदित्य ठाकरे के साथ ही साथ राज्य सभा सांसद संजय राउत के करीबियों के खिलाफ कार्रवाई की थी। ईडी ने आदित्या के सहयोगी सूरज चवन के ठिकानों पर छापे मारे थे। साथ ही, ईडी अधिकारियों ने जायसवाल तथा राउत के सहयोगी सुजित पाटकर सहतिया 14 अन्य लोगों के ठिकानों पर भी तलाशी ली थी।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में महाराष्ट्र सरकार ने कोविड 19 महामारी के दौरान बीएमपी द्वारा दिए गए 12,000 करोड़ रुपये के ठेकों में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट की जांच के लिए एक विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित करने की घोषणा की थी।

31 जुलाई...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

टी.आर. फाइल कर सके। वर्तमान में करदाता वित्तीय वर्ष 2022-23 में अर्जित आय का रिटर्न फाइल करेंगे। आई.टी.आर. फाइल करके आप सरकार को अपनी आय व निवेश के बारे में जानकारी देते हैं। इस बार इन्कम टैक्स रिटर्न फाइल करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2023 निर्धारित की गई है। ऐसी स्थिति में करदाताओं को आई.टी.आर. संबंधी सभी दस्तावेज इकट्ठे करने शुरू कर देने चाहिए। निजी करदाताओं, एच.यू.एफ. (हिन्दू अनडिवाइडेड फैमिली), ए.ओ.पी. (असोसिएशन ऑफ पर्सन्स), बी.ओ.आई. (बॉडी ऑफ इन्डिविजुअल्स) या जिनकी अकाउन्ट बुक्स के ऑडिट की आवश्यकता नहीं है, के लिए रिटर्न फाईल करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2023 है। जिन व्यवसायों की अकाउन्ट बुक्स का ऑडिट होने की आवश्यकता है, उनके लिए रिटर्न फाइल करने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2023 है। जो बिजनेस, जिनका अन्तर्राष्ट्रीय लेन-देन है या विशेष घरेलू लेन-देन है, को रिटर्न फाइल करने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर 2023 दी गई है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहा कि कांग्रेस अपने सैद्धांतिक कारणों के चलते, अन्ततोगत्वा, अध्यादेश का विरोध तो करेगी, लेकिन विरोध करने के समय का चयन वह स्वयं करेगी। इस समय, जब संसद के मानसून सत्र की तिथियों की घोषणा तक नहीं हुई है, आप के समर्थन की घोषणा की जल्दी भी क्या है।

कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित, जो पार्टी में आप के घोर विरोधियों में शामिल हैं, ने आप की ताजातरीन की अंतिम चेतावनी को लेकर केजरीवाल पर कटाक्ष करते हुये कहा, "केजरीवाल जी, आपका (मीटिंग में) न होना किसी को नहीं खलेगा। आप तो इससे बचने का रास्ता ढूंढ ही रहे थे।..... यह मीटिंग ऐसे लोगों के लिये है ही नहीं, जो सौदेबाजी करते हों।"

इस बीच, समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश की ऐसी एक मात्र पार्टी होगी, जो शुक्रवार को पटना में विपक्षी नेताओं की मीटिंग में शामिल होगे। दरअसल,

बसपा प्रमुख मायावती को तो मीटिंग के लिये आमंत्रित ही नहीं किया गया है, जबकि राष्ट्रीय लोकदल अध्यक्ष जयंत चौधरी किसी पारिवारिक कार्यक्रम के कारण, मीटिंग में शामिल नहीं होंगे।

लेकिन चौधरी ने आशा व्यक्त की है कि यह मीटिंग "विपक्षी एकता की राह में महत्वपूर्ण मील का पत्थर" साबित होगी।

सपा नेता अखिलेश यादव सभी विपक्षी नेताओं से आग्रह कर रहे हैं कि वे लोकसभा चुनावों में भाजपा को हराने के लिये परस्पर हाथ मिला लें। विपक्षी दलों की इस मीटिंग में भागीदारी करने वाले दलों पर निशाना साधते हुए, मायावती ने गुरुवार को कहा कि इस मीटिंग का जोर मन मिलाने की अपेक्षा हाथ मिलाने पर ज्यादा है।

बसपा अध्यक्ष को इस विपक्षी मीटिंग में इसीलिये आमंत्रित नहीं किया गया है क्योंकि जब विपक्ष के किसी महत्वपूर्ण नेता ने उनसे इस संबंध में संपर्क किया था, उस समय उन्होंने इस

प्रकार की किसी मीटिंग के आयोजन में रूचि नहीं दिखाई थी। मायावती दोनों राष्ट्रीय दलों-भाजपा तथा कांग्रेस-से बराबर दूरी बनाये हुये हैं।

जे.डी. (यू) के मुख्य प्रवक्ता के.सी. त्यागी ने मीडिया को बताया, "हमने उन्हीं पार्टियों को आमंत्रित किया, जो 2024 में भाजपा के खिलाफ लड़ने की इच्छुक हैं। बसपा कहती है कि वह गठबंधन का हिस्सा नहीं बनेगी, तो हम अपना समय बरबाद क्यों करें।"

मायावती ने कहा कि विपक्षी दलों के रूख से ऐसा नहीं लग ही रहा है कि वे उत्तर प्रदेश में अपने उद्देश्य को लेकर गंभीर हैं।

उन्होंने कहा, "उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटें चुनावी सफलता की कुंजी मानी जाती हैं लेकिन विपक्षी दलों के तौर-तरीकों से ऐसा लगता ही नहीं है कि वे यहां अपने उद्देश्य को लेकर गंभीर है तथा उन्हें वास्तव में अपने उद्देश्य से कोई सरोकार है। सही प्राथमिकताओं के बिना, यहां लोकसभा चुनावों की

तैयारियां वास्तव में कोई आवश्यक परिवर्तन इष्टित हो रहा है?"

उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि अगले लोकसभा चुनावों की तैयारियों को ध्यान में रखते हुये, बेहतर यह होता कि इन पार्टियों ने बिल्कुल साफ एवं स्पष्ट उद्देश्यों और इरादों के साथ जनता के मन में एक सामान्य विश्वास पैदा किया होता, मन में अच्छी तरह बैठा दिया होता।

उन्होंने आगे कहा, "मुंह में राम, बगल में छुरी" आखिर कब तक?"

आर.एल.डी. नेता चौधरी ने कहा कि वे एक "पूर्व निर्धारित पारिवारिक कार्यक्रम" के कारण मीटिंग में उपस्थित नहीं होंगे।

नीतीश कुमार को लिखे गये एक पत्र, जो आर.एल.डी. के अधिकृत टिवटर पर गुरुवार को शेयर किया गया, में चौधरी ने कहा, "जिस तरह अधिनायकवादी एवं साम्प्रदायिक ताकतें लोकतंत्र तथा देश के सामाजिक सीहार्द के लिये खतरा बन रही हैं, यह

इस समय की जरूरत है कि समान विचार वाले विपक्षी दल संगठित हो जायें।

देश की महत्वपूर्ण समस्याओं तथा सामने खड़ी चुनौतियों पर चर्चा करके, समूचा विपक्षी जनता के समक्ष एक दूरगामी एवं व्यवहारिक योजना रख सकता है।"

उन्होंने कहा, "इस प्रकार, हम मिलकर देश में एक ऐसा सार्थक बदलाव ला सकते हैं, जो युवाओं, महिलाओं, किसानों तथा समाज के वंचित वर्गों की आकांक्षाओं के अनुरूप हो।"

मीटिंग की कामयाबी के लिए अपनी शुभकामनाएं देते हुये, आर.एल.डी. प्रमुख ने कहा, "मुझे विश्वास है कि यह मीटिंग विपक्षी एकता की राह में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी।" विपक्षी दलों के शीर्ष नेता शुक्रवार को पटना में हो रही इस मीटिंग, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के लिये एक भाजपा विरोधी मोर्चा बनाने

की रूपरेखा तैयार करने के लिये हो रही है, इस बारे में गहन चिंतन करेंगे।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, पार्टी नेता राहुल गांधी, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, दिल्ली के मुख्यमंत्री तथा आप के संयोजक अरविन्द केजरीवाल, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे तथा एन.सी.पी. अध्यक्ष शरद पवार उन शीर्ष नेताओं में शामिल हैं, जिनकी कल विपक्ष की इस उच्च स्तरीय मीटिंग में उपस्थित होने की आशा है।

के.सी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आशीर्वाद देने जयपुर आए हैं। जवाहर सर्किल स्थित एंटरटेनमेंट पैराडाइज़ में होने वाले इस विवाह समारोह में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सहित कई अन्य मंत्री व विधायक भी मौजूद रहेंगे।

MARUTI SUZUKI

NEXA

THE ADVANCED

GRAND VITARA

RULE EVERY ROAD

INTELLIGENT ELECTRIC **(HYBRID)**

ALL GRIP

Scan the QR code to experience Grand Vitara at NEXAVerse.

NEXA Verse

CREATE. INSPIRE.

PANORAMIC SUNROOF

VENTILATED SEATS

6 AIRBAGS

EV MODE

DRIVE MODE SELECTOR

DIGITAL MULTI-INFORMATION DISPLAY

NEXA Safety Shield
Standard Across All Variants

- DUAL FRONT AIRBAGS
- ABS WITH EBD
- PEDESTRIAN PROTECTION COMPLIANCE
- FULL FRONTAL IMPACT
- FRONTAL OFFSET IMPACT
- SIDE IMPACT

Feature and accessories shown may not be part of standard fitment. Black glass shade on the vehicle is due to lighting effect. Images used are for illustration purposes only.

Contact us at
1800-200-6392
1800-102-NEXA

AJMER: NEXA MAKHUPURA (NAVNEET MOTORS PH: 9116116501, 9116116502).

www.nexaexperience.com
NOW YOU CAN ALSO BOOK ONLINE

SMART FINANCE
AN ONLINE END-TO-END CAR FINANCE SOLUTION

Scan to know more.

Multiple financiers
Digital Document Upload
Live Loan status
Complete transparency (associated fees & charges)

Creative visualization | Black glass on the vehicle is due to lighting effect | Features are variant specific | For details on functioning of safety features, including air bag, kindly refer to the Owner's Manual.

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुघर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आर्यद मैन रोड आर्यद, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालौर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालौर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908

